Chapter-1

प्रथम अध्याय

महाकवि निराला - व्यक्तित्व विश्लेषण

प्राक्कथन :- प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का विषय - ' महाकवि निराला-दर्शन और कला ' है. इस विषय के सम्यक् अध्ययन करने के हेतु यह आवश्यक प्रतीत होता है कि पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी ' निराला ' के महाकवि-रूप का परिचय प्राप्त कर लिया जाय. वस्तुत: निरालाजी का कृतित्व ही उनके महाकवि-रूप को सिध्द करता है, जो उनके विशिष्ट व्यक्तित्व के विशेष रूप का परिपाक है. अत: निरालाजी के महाकवि-रूप और उनके दर्शन एवं कला के वैशिष्ट्य के अध्ययन के लिये उनके व्यक्तित्व का अध्ययन अत्यंत आवश्यक कहा जा सकता है.

निरालाजी के जीवन-चरित्र तथा कृतित्व के सामान्य परिचय के आधार पर ही यह कहा जा सकता है कि वे विशिष्ट व्यक्तित्व अर्थात् असामान्य् व्यक्तित्व (अर्थात् महाव्यक्तित्व) से सम्पन्न महाकवि थे. अतएव प्रस्तुत अध्याय में सर्व प्रथम आधुनिक मनोविज्ञान के आधार पर सामान्य एवं विशिष्ट व्यक्तित्व के भेद को स्पष्ट करते हुए निरालाजी के व्यक्तित्व का विकासात्मक एवं स्वरूपात्मक अध्ययन किया गया है, जिससे उनके दार्शनिक--कवि-रूप को सम्यक् रूप में समझा जा सके. उक्त अध्ययन के आधार पर ही निरालाजी के काव्य के दर्शन एवं कला पक्ष

का विवेचन करना तर्कसंगत एवं उपयोगी प्रतीत होता है. अत: प्रस्तुत अध्याय का अध्ययन-क्रम निम्नलिखित रहेगा :

१) व्यक्तित्व और महाव्यक्तित्व की व्याख्या.
२) निरालाजी के व्यक्तित्व का विकास .
३) निराला - महाव्यक्तित्व .
४) निरालाजी का दार्शनिक-कवि रूप .
५) उपसंहार .

१: व्यक्तित्व और महाव्यक्तित्व की व्याख्या :-

१ - १. व्यक्तित्व शब्द की व्याख्या : हिन्दी में व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग अंग्रेजी के Personality शब्द पर्याय के रूप में होता है . अंग्रेजी के उक्त शब्द की व्युत्पत्ति शास्त्रीय (Classical) लेटिन के Persona से मानी जाती है .[१] नट के कृत्रिम मुख (Mask) को लेटिन में Persona कहा जाता था.[२]

---

1. Allport Gordon W., Personality- A Psychological Interpretation 1937 p. 25.
2. Ibid p. 25.

(धार्मिक दृष्टि से) पश्चिम के Scholastics जैसे धार्मिक दर्शनों के अनुसार - विशिष्ट, सचेत, व्यष्टिगत और अमरत्व से युक्त मानवीय संरचना (Human - Organism) के लिये भी व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग किया जाता था .[१]

सामान्यत: ' व्यक्तित्व ' की सर्वमान्य परिभाषा देना अत्यंत कठिन कार्य समझा जाता है . फिर भी विद्वानों ने (गणित-शास्त्र, शरीर-शास्त्र, समाज-शास्त्र आदि के) दृष्टिकोणों से व्यक्तित्व के अर्थ को समझा और स्पष्ट किया है. उदाहरणार्थ मनोविज्ञान इस विषय का सर्वांगीण अध्ययन करता है, अत: उसके आधार पर ही ' व्यक्तित्व ' के स्वरूप को समझाना तर्कसंगत होगा. प्रसिध्द मनोवैज्ञानिक रमंड केटल ने व्यक्तित्व की परिभाषा इस प्रकार दी है - ' व्यक्तित्व वही है जो निश्चित स्थिति में व्यक्ति के आचरण का निर्धारण करे .[३] इस को स्पष्ट करते हुए वह आगे कहता है - ' किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व वह है जो हमें यह कहने की योग्यता दे सके कि किसी विशेष स्थिति में वह किस प्रकार का आचरण करेगा .[४] तात्पर्य यह कि परिस्थिति और उसकी प्रतिक्रिया के संदर्भ में व्यक्तित्व के एकरूप का निर्धारण हो सकता है .

१-२ व्यक्तित्व का स्वरूप : आलपोर्ट नामक मनोवैज्ञानिक ने भी व्यक्तित्व का अत्यंत विशद एवं गहन अध्ययन किया है. मनुष्य में दृष्टिगत वैशिष्ट्य और भिन्नत्व के अतिरिक्त उसकी ' मनोवैज्ञानिक व्यष्टिगत सता ' के आधार पर उसने व्यक्तित्व के स्वरूप को स्पष्ट करने का प्रयास किया है. उसके अनुसार व्यक्तित्व में व्यक्ति के चिंतन,

---

1. Cattell Raymond B., An Introduction to Personality Study, 1950, p.20.
2. Ibid, p. 221. 3. ibid p. 221. 4. Ibid p. 21.

अभिव्यक्ति, वृत्ति, प्रवृत्ति, रुचि तथा विशिष्ट जीवन-दर्शन आदि सभी का समाहार हो जाता है.[1] संक्षेप में कहा जा सकता है कि प्रत्येक मनुष्य में कुछ ऐसी सामान्यताएं होती हैं जिनके कारण उसे ' व्यष्टि ' या मनुष्य कहा जाता है, साथ ही उसमें कुछ ऐसी असामान्यताएं भी होती हैं जिनके कारण उसे ' व्यक्ति ' कहाजाता है'. वस्तुत: ये असामान्यताएं ही व्यक्ति के ' व्यक्तित्व ' का निर्माण करती हैं. आलपोर्ट के अनुसार व्यक्तित्व, व्यक्ति की उन मनोवैज्ञानिक-शारीरिक रचनाओं का गत्यात्मक संगठन है जो व्यक्ति का उसके परिवेश के साथ अनुकूल समाधान निर्धारित करता है.[2]

तुलनात्मक दृष्टिसे आलपोर्ट और केटल के विचारों मे पर्याप्त संगति दिखाई पडती है. केटल ने जिस परिस्थिति के संदर्भ मे मनुष्य का आचरण कहा है, उसे आलपोर्ट ने अनुकूल समाधान (Adjustment) के रूप मे स्पष्ट किया है. आशय यह कि व्यक्ति की समग्र प्रकृति को ही व्यक्तित्व की संज्ञा दी जा सकती है. अत:

---

1. Allport G.W., Personality-A Psychological Interpretation p.48.
2. Schorer M., Human Nature, 1930, p. 397.
3. Allport Gordon W., Personality - A Psychological - Interpretation p. 48.

आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने ' व्यक्ति की समग्रता (Totality of person) को ही व्यक्तित्व माना है .'[1]

व्यक्तित्व संबन्धी उक्त विवेचन के आधार पर निम्नलिखित तथ्यों को सार रूप में स्वीकृत किया जा सकता है -

१) मनुष्य की ~~व्यष्टिगत सत्ता~~ (Individuality) और व्यक्तिगत सत्ता (Personality) दो भिन्न वस्तुएँ हैं.

२) व्यक्ति की समग्रता के रूप में व्यक्तित्व, अपने आप में एक पुंजीभूत संकुलता (Condensed Complexity) है.

३) परिस्थिति के संदर्भ या परिप्रेक्षा में व्यक्ति की समग्रता को गत्यात्मक संगठन (Dynamic Organisation) के रूप में देखा जा सकता है.

४) अतः परिस्थिति के संदर्भ में की गई प्रतिक्रिया, व्यक्तित्व की निर्धारित्री समझी जा सकती है .

५) आशय यह कि परिस्थिति के संदर्भ में मनुष्य के व्यक्तित्व को समझा जा सकता है.

---

1. (a) Allport G.W. Personality - A Psychological Interpretation p.24.
   (b) Lowrey L.G., Proc. Second Colloquium on Personality Investigation, 1930, p. 149,151.
   (c) Morton Prince, The Unconscious, 2nd ed.1924,p.532.

१-३ असामान्य व्यक्तित्व : व्यक्तित्व के स्वरूप, संरचना, आदि को दृष्टि में रखकर मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व के अनेक प्रकार बताए हैं. इस दृष्टि से प्रसिध्द मनोवैज्ञानिक युंग का नाम विशेष रूप से उल्लेखनिय है. युंग ने व्यक्तित्व के दो भेद बताए हैं- ' अन्तर्मुखी ' एवं ' बहिर्मुखी '. परंतु आधुनिक मनोविज्ञान इस प्रकार के भेद स्वीकार नहीं करता. आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्ति के विकास को दृष्टि में रखकर स्थूल रूप से तीन भेद बताए हैं' - औसत या सामान्य, सामान्य से नीचे, सामान्यसे ऊपर. इनमें से अन्तिम दो प्रकार के व्यक्तित्वों मे ही गुत्थियाँ या समस्याएं खड़ी होती हैं, तथा आधुनिक मनोविज्ञान की एक शाखा इनका विशेष विश्लेषणात्मक अध्ययन करती है. निम्न आकृति व्दारा व्यक्तित्व के उक्त प्रकार स्पष्ट किए जा सकते हैं.:

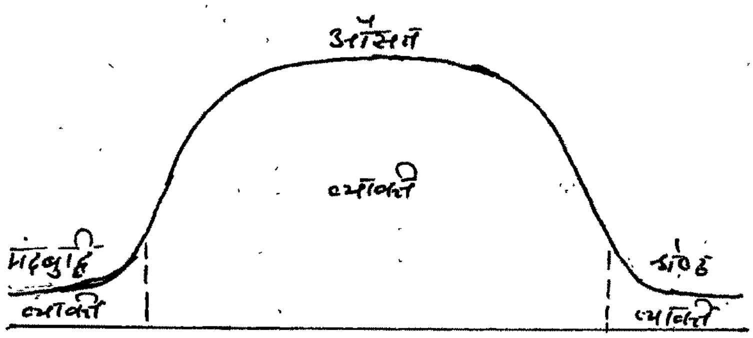

विद्वानों के अनुसार हम व्यक्तियों को अथवा उनकी परिस्थितियों को देखकर प्राय: उन्हें केवल इसी आधार पर सामान्य या असामान्य कह देते हैं, कि वे किस हद तक हमारी उनके विषय में की गई धारणा के अनुकूल या प्रतिकूल निकलते हैं.'[1] हम सामान्य को ' इच्छनीय ' के तदनुरूप मान लेते हैं. एकअन्य

---

१. Wile Ira S., Readings in the Psychology of Adjustment Ed,by Leon Gorlow & Walter Katkovsky, 1959, p. 7[illegible].

मनोवैज्ञानिक ने ' सामान्यता ' की व्याख्या इस प्रकार की है - ' मनोवृत्ति संबंधी हमारे अपने स्व-निर्मित मानदण्ड .'[१]

सामान्य एवंअसामान्य व्यक्तित्व के स्वरूपके विषय में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है, परंतु अंततः असामान्य व्यक्तित्व के विषय में माना जाता है कि प्रायक: सर्व साधारण रूप से निर्धारित आदर्श या मानदण्ड से भिन्न व्यक्तिका आचरण उसके असामान्य व्यक्तित्व को सिध्द करता है[२]. इस प्रकार यादि असामान्यता को निश्चित आदर्श या समूह या कोटि (टाईप) से भिन्नत्व के रूप में देखा जाय तो सभी नेता, प्रतिगामी, अन्वेषक, सृष्टा, अथवा क्रांतीकारी विचारक आदि असामान्य माने जा सकते है. कारण यह कि असामान्यता के अन्तर्गत ' श्रेष्ठ सामान्यता ' Super-Normality भी मानी जा सकती है. आशय यह कि प्रतिभाशाली भी उतना ही असामान्य है जितना मूर्ख या मन्दबुध्दि[३]. यह तथ्य ही पूर्व दी गई आकृति द्वारा स्पष्ट कियाँ गया है. आशय यह कि : -

१) असामान्य व्यक्तित्व का निर्धारण विशिष्ट असामान्यताओं के आधार पर होता है. हमारे स्व-निर्मित मानदण्डों या हमारी धारणाओं के आधार पर व्यक्तित्व की सामान्यता अथाव असामान्यता नहीं देखी जा सकती.

२) असामान्यता, औसत या सामान्य व्यक्तित्व के स्वस्थ-विकार एवं अस्वस्थ-विकार दोनों रूपों में देखी जा सकती है.

---

1. Wile Ira S., Readings in the Psychology of Adjustment, Ed. by Leon Gorlow & Walter Katkovsky 1959, p. 74.
2. Ibid, p. 76.
3. Ibid, p. 78.

३) अतएव असामान्य व्यक्तित्व, व्यक्तित्व की उन विशिष्ट असामान्यताओं का निर्देश करता है जिन्हें अपवादात्मक कहा जाता है. ये विशिष्ट असामान्यताएं श्रेष्ठ व्यक्तित्व का भी निर्धारण करती है, अत: असामान्य व्यक्तित्व (Abnormal Personality) श्रेष्ठ व्यक्तित्व (Superior Personality) भी होता है.

१-४ महाव्यक्तित्व (श्रेष्ठ व्यक्तित्व) और उसके लक्षण : असामान्य मनोविज्ञान के अंतर्गत श्रेष्ठ असामान्य

व्यक्तित्वका विशेष अध्ययन गोर्डन आलपोर्ट, ए.एच. मेस्लो, और हेन्री क्ले स्मिथ नामक विद्वानोंने विशेष रूपसे किया है. आलपोर्ट, मेस्ली, तथा स्मिथ ने जिस असामान्य (प्रौढ, श्रेष्ठ) व्यक्तित्व के लिये क्रमश: Mature Personality[1], Self Actualizing Personality[2], Superior Personality[3].

नाम दिये हैं उसके लिये प्रस्तुत अध्ययन में हिन्दी के 'महाव्यक्तित्व' शब्द का प्रयोग किया गया है, क्यों कि उक्त तीनों अंग्रेजी शब्दोंका मूल भाव व्यंजित करने में यह शब्द पूर्णरूपेण सक्षम है.

स्मिथ ने विशेष गुणों या संस्कारों के आधार पर महाव्यक्तित्व कीअवधारणा की है. उसके अनुसार महाव्यक्तित्व क्वचित ही मिलता है. अत: यह माना जा सकता है कि महानता के लिये विशिष्ट गुण अथवा विशिष्ट संस्कार कारणभूत रहते हैं, सर्व सामान्य गुण या संस्कार नहीं.[4] आलपोर्ट ने भी उक्त दृष्टिकोण से अध्ययन किया है.[5]

व्यक्तित्व के उक्त रूप का अध्ययन करने के हेतु मेस्लो ने जिन मानदण्डों का निरूपण किया है, वे विशेष रूपसे महत्वपूर्ण हैं. ये मानदण्ड उसने विभिन्य कोटि

---

1. Allport G.W. Personality -A psychological Interpretation, p. 213.
   Smith Henry Clay, Personality Adjustment, 1961, p. 376.
2. Maslow A.H. Motivation and Personality 1954, p.199-234.
   Smith Henry Clay, Personality Adjustment, p. 376.
3. Smith Henry Clay, Personality Adjustment, 1961, p.376
4. Ibid, p. 376. 5. Ibid p. 377.

के विविध व्यक्तियों के व्यक्तित्वों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन एवं विश्लेषण करने के पश्चात् निर्धारित किये है. यद्यपि मेस्लो के अनुसार ये मानदण्ड परिपूर्ण नहीं है.[1] परंतु फिर भी इन्हें निरालाजी के महाव्यक्तित्व का मूल्यंकन करने के हेतु प्रमाणभूत एवं सहायक माना जा सकता है.

१-५ : महाव्यक्तित्व के लक्षण :-[2]

(१-५-१) वृत्तियाँ - - (Drives)

१- प्राकृत जीवन का स्वीकार (Acceptance of nature)

२- प्रेम और काम का परस्पर विलयन (Fusion of Sex and love

(१-५-२) स्वभाव - (Temperament)

१- स्वयंस्फूर्तता (Spontaneity)

(१-५-३) इन्द्रिय बोध - (Perception)

१- वास्तविकता के बोध की दक्षता (Efficient - perception of reality)

२- सहृदयता की अखण्ड नवीनता (Continued freshness of appreciation))

(१-५-४) मूल्य - (Values)

१- रहस्यात्मक अनुभूति (The mystic experience)

२- साधन एवं साध्य का विवेक (Descremination between means and ends))

---

1. Maslow A.H., Motivation and Personality P. 199, 203.
   Smith Henry Clay- Personality Adjustment P.383.
2. Maslow A.H. Motivation and Personality(Discussed in part II) 1954, p. 199.234.

   तुल : Smith Clay- Personality Adjustment, P. 380.

(१-५-५) स्व - (The Self)

१- स्व एवं पर का स्वीकार (Acceptance of self and others)

२- दार्शनिक विनोद (Philosophic humor)

(१-५-६) समस्या निवारण - (Problem solving)

१- समस्या का केन्द्रीकरण (Problem Centering)

(१-५-७) मानवीय सम्बन्ध - (Human relations)

१- अनासक्ति का गुण (The quality of detachment)

२- एकांत की आवश्यकता (The need for privacy)

३- घनिष्ठ एवं प्रगाढ वैयक्तिक संबन्ध (Deep and profound interpersonal relations)

४- मानवजाति के साथ एकात्मीकरण या अभिन्नत्व (Identification with mankind)

५- विसंस्कृतिकरण का प्रतिरोध (Resistance to enculturation.)

यहाँ यह विशेष रूपसे उल्लेखनीय है कि आधुनिक मनोविज्ञान की प्रायोगिक प्रविधि के अनुसार निरालाजी के व्यक्तित्व का अध्ययन पूर्णतः होना तो संभव नहीं है, क्योंकि वे स्वयं जीवित नहीं है, अतः मात्र उनकी रचनाओं में, तथा उनके आत्मीय, स्वजन, मित्र इत्यादि द्वारा प्राप्त सूचनाओं एवं इतर सामग्री के आधार पर ही स्थूल रूप में उनके व्यक्तित्व की रूपरेखा खीचते हुए उसके स्वरूप का निर्धारण किया जा सकता है .[१]

१-दे: परिशिष्ट-सं-१- पृ-४४०

परंतु इस प्रकार का अध्ययन करने से पूर्व उनके व्यक्तित्व का विकासात्मक अध्ययन करना आवश्यक एवं उपयोगी है, अतः प्रथम उसीका विवेचन किया जा रहा है.[1]

२: निरालाजी के व्यक्तित्व का विकास :-

२ - १ पारिवारिक पृष्ठभूमि : निरालाजी के पिता पं. रामसहायजी तथा चाचा पं. रामलालजी, बंगाल में पुलिस-विभाग में नौकर थे. एक बार गवर्नर के साथ इन दोनों बन्धुओं को भी बंगाल में में स्थित महिषादल राज्य के दौरे पर जाना पडा. महिषादल के राजा साहब इन त्रिपाठी बन्धुओं से अत्यंत प्रभावित हुए. उन्होंने इन दोनों को राज्य की सेवा के लिये, गवर्नर से इस शर्त पर मांग लिया, कि महिषादल में भी उन्हें वेही सुविधाएं प्राप्ता होंगी जो अंग्रेजी राज्य की नौकरी में प्राप्ता होती थीं. इस प्रकार निरालाजी के पिता एवं चाचा का महिषादल राज्य में स्थानान्तरण हो गया.[२] मूलतः यह परिवार

---

१. टिप्पणि :- व्यक्तित्व-अध्ययन के सामग्री संचयन के हेतु जो प्रश्नावली तैयार की थी तथा जिन स्त्रोतों से सामग्री हुई है उसकी सूचना के हेतु देखिए परिशिष्ट :

२. सम्मेलन-पत्रिका श्रद्धांजली विशेषांक (चैत्र-मार्गशीर्ष:शाक १८८४, भाग,४८ सं. २-३-४) साहित्य सम्मेलन-प्रयाग ---पृष्ठ-५१७.

उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के गढाकोला स्थान का निवासी था.

२-२. शैशव तथा बाल्यावस्था - आयु १ से १४ वर्ष : निरालाजी का जन्म महिषादल में हुआ.

इनकी जन्म-तिथि के विषय में पर्याप्त मतभेद है. विभिन्न ग्रन्थों में दी हुई तिथियां इस प्रकार है :-

श्री रामनरेश त्रिपाठी-कविता-कौमुदी भाग-२-माघ सुदी ११ स. १९५५.

श्री श्याम सुंदर दास-हिन्दी निर्माता भाग-२-माघ शुक्ल ११ स. १९५३.

डॉ. रामविलास शर्मा-निराला तथा श्री बच्चनसिंह-क्रांतिकारी कवि निराला - बसंत पंचमी स.१९५३.

महापंडित राहुल सांकृत्यायन - नये भारत के नये नेता-बसंत पंचमी स.१८९६ई.

'नया साहित्य' नवम्बर १९६१ के अंक में -बसंत पंचमी २ फरवरी १८९६ई[२]

परंतु निरालाजी की जीवित अवस्था में उनकी जन्मतिथि, बसंत पंचमी सं. १९५३ अर्थात सन् १८९६ मानी जाती थी अत: इसीको स्वीकार किया जा सकता है.[३]

पं. रामसहायजी की प्रथम पत्नी के कोई संतान नहीं थी, उनकी दूसरी पत्नीसे निरालाजी का जन्म हुआ था. श्री गंगाप्रसाद पांडेय के अनुसार निरालाजी अपने पिता की दूसरी पत्नी के पुत्र थे.

---

१ - महाप्राण निराला - श्री गंगाप्रसाद पांडये, पृष्ठ २३(प्रथम आवृत्ति साहित्यकार संसद-प्रयाग) 'अन्तरवेद' - वसंत पंचमी पृष्ठ १२.

२ - 'अन्तरवेद' - वसंत पंचमी १८६२ पृष्ठ -४०. से

३ - वही.

४ - महाप्राण निराला - श्री. गं. पांडेय, पृष्ठ -२२.

परंतु डा०रामविलास शर्मा ने एक स्थान पर यह कहा है कि पं०रामसहायजी ने दूसरा विवाह नहीं किया। परंतु अन्यत्र उन्होंने, स्वयं निरालाजी के कथन को उद्धृत करते हुए इस तथ्य की पुष्टि की है कि निरालाजी के पिता ने दो विवाह किये थे।[1] पं० राहुल सांकृत्यायन ने भी पं० रामसहाय त्रिपाठी की दो पत्नियों का उल्लेख किया है। प्रथम पत्नी का नाम रुक्मिणीदेवी बताया है।[2] स्वयं निराला जी ने कहा है-"मारते वक्त पिताजी भूल जाया करते थे कि वे दो विवाह के बाद पाये हुए इकलौते पुत्र को मार रहे हैं।[3] आशय यह कि निरालाजी अपने पिता की दूसरी पत्नी के पुत्र थे। बचपन में उनका नाम सूर्यकुमार रखा गया था।[4]

माता की मृत्यु के समय निरालाजी की आयु के विषय में भी मत-भेद है। श्री०गं०पांडेय के अनुसार निरालाजी की किशोरावस्था में माता की रहस्यात्मक ढंग से मृत्यु हुई।[5] इस मृत्यु का क्या रहस्य था यह स्पष्ट नहीं किया गया है। डा०रा०शर्मा के अनुसार माता की मृत्यु के समय निरालाजी तीन वर्ष के थे।[6] स्वयं निरालाजी के अनुसार माता की मृत्यु के समय उनकी आयु ढ़ाई वर्ष की थी।[7]

निरालाजी के पिता का महिषादल-राज्य में महत्वपूर्ण स्थान था।[8] वे सौ सिपाहियों के ऊपर जमादार थे। राज परिवार में उनका आदर व सम्मान था। अत: निरालाजी का राज परिवार में निर्बन्ध आना-जाना रहता था।

१- शर्मा रामविलास - निराला - पृष्ठ-१-२ , १९६२

~~२--निराला---कुल्लीभाट---पृष्ठ-४१,चौथी-आवृत्ति~~
२- सांकृत्यायन राहुल - नये भारत के नये नेता - पृष्ठ-
३- निराला - कुल्लीभाट - पृष्ठ-४१ ,चौथी आवृत्ति
४- शर्मा रामविलास - निराला - पृष्ठ-१,१९६२
५- पांडेय गंगाप्रसाद - महाप्राण निराला - पृष्ठ-२३-२४ ६-शर्मा रामविलास-निराला - पृष्ठ - १
७- निराला - "चकल्लस" (हास्यरस साप्ताहिक) भाभी अंक-पृष्ठ२३
८- सम्मेलन-पत्रिका श्रद्धांजली विशेषांक - चैत्र-मार्गशीर्ष-सं०२-३-४५ पृष्ठ-३८०

अत्यंत प्रिय होने के कारण,बाल्यकाल में,राज परिवार के एक सदस्य के रूप में वे भी ठाठ-बाट तथा रईसी वातावरण में बढ़े हुए । कहा जाता है कि वहां के राजा ने इनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर इन्हें गोद लेने की इच्छा व्यक्त की थी ।[१]

प्रारम्भिक शिक्षा बंगला-पाठशाला में प्राप्त करने के पश्चात् वे हाईस्कूल में आए । यहां उन्होंने अंग्रेजी का भी अध्ययन किया । जब वे ८ वीं कक्षा में थे तब उन्होंने Gulliver's Travels पुस्तक पढ़ी थी,जिसके शब्दानुप्रास का यह उदाहरण उन्हें अंतिम दिनों में भी याद था-[२] A Camel is able to travel for several days without water- बंगला साहित्य के परिचय ने उनके सामने रवीन्द्रनाथ तथा रवीन्द्र-साहित्य के रूप में प्रेरणा का नया स्रोत खोल दिया। स्कूल की पढ़ाई से अरुचि हो जाने के कारण निरालाजी ने रवीन्द्रनाथ का ही आदर्श सामने रखकर ६वीं कक्षा के बाद अपने आप को उस कृत्रिम अध्ययन से मुक्त कर लिया ।[३] इस काल में बंगला के अतिरिक्त संस्कृत तथा अंग्रेजी का अच्छा अध्ययन निरालाजी ने कर लिया था । उन्होंने बाल्यावस्था में ही बंगला और संस्कृत में पद्य-रचना करना आरंभ कर दिया था ।[४] कुछ रचनाएं अवधी तथा ब्रजभाषा में भी की थीं ।[५] अंग्रेजी का अध्ययन वे आजीवन करते रहे । विशेष रूप से शैक्सपियर के नाटकों को वे सदा पढ़ते रहे । १५ वर्ष की अवस्था में ज्युलिअस सीज़र,१७ वर्ष की अवस्था में मरचन्ट ऑफ वेनिस,तथा २५ वर्ष की अवस्था में किंग लियर को

१- पांडेय गंगाप्रसाद : महाप्राण निराला - पृष्ठ,२६

२- 'अन्तरवेद' : बसन्त पंचमी - १६६२ - पृष्ठ- ३८

३- शर्मा रामविलास : निराला-पृष्ठ-३ ,'अन्तरवेद' : बसन्त पंचमी १६६२-पृ-१२

४- निराला: कुल्लीभाट - पृष्ठ-७६ ,'देवी'-पृष्ठ-४८

५- पांडेय गंगाप्रसाद : महाप्राण निराला- पृष्ठ- २८

पढ़ा था । इनमें ज्युलियस सीज़र तथा अन्य नाटकों के उद्धरण उन्हें कंठस्थ थे,तथा इनसे उन्हें प्रेरणा मिलती थी ।[1] परंतु हिन्दी पढ़ने का सौभाग्य उन्हें बाल्यकाल में नहीं मिला,जिसके कारण भविष्य में अपनी पत्नी के आगे लज्जित होना पड़ा ।[2]

बाल्यकाल में ही निरालाजी ने साहित्य के अतिरिक्त संगीत तथा कुश्ती का अभ्यास किया,और इनमें अपना प्रावीण्य दिखाया ।[3] कलकत्ते में आयोजित तृतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के समय बंग साहित्य परिषद की ओर से सम्मेलनवालों का स्वागत किया गया था । उस अवसर पर निरालाजी ने हारमोनियम पर स्वागत-गान गाया था । स्वयं रवीन्द्रनाथ ने उस समय उनका परिचय `हिन्दुस्तानी बालक` कह कर दिया था ।[4]

एक ओर माता का अभाव तथा दूसरी ओर ऐसी बहुमुखी प्रतिभा होने पर भी निरालाजी को अपने पिता की ओर से उचित स्नेह नहीं मिला। उनके पिता स्वभाव के अत्यन्त क्रोधी,तथा पेशे से सिपाही होने के कारण कठोर अनुशासन रखते थे । इधर निरालाजी भी बाल्यकाल से ही स्वतंत्र स्वभाव के थे । वे किसी का दबाव नहीं सहन कर पाते थे,और विशेषतः अकारण दबाव तो उन्हें कदापि स्वीकार नहीं था ।[5] अतः वे दबाव के विरुद्ध विद्रोह किया करते थे,परिणामस्वरूप उन्हें पिता की ओर से कड़ी मार पड़ती थी।[6]

१- `अन्तरवेद`: बसन्त पंचमी - पृष्ठ- ३६ , २- [illegible]

३२- पांडेय गंगाप्रसाद : महाप्राण निराला - पृष्ठ- ३२

४३- `अन्तरवेद`: वही अंक- पृष्ठ- २४

५४- निराला : कुल्लीभाट - पृष्ठ- ३६

६५- वही : पृष्ठ- ४१-४२

जिसे वे सहते ते परंतु उस मार के भय से अपनी वृत्तियों और प्रवृत्तियों से कभी विमुख न हुए. इस बाल हठ और कष्ट-सहिष्णुता का ही परिपाक स्वसिध्दान्ताग्रह तथा अदम्य साहस पूर्वक गरल पान का शंकर संकल्प निरालाजी के व्यक्तित्व मे आगे दृष्टि-गोचर होता है.

संक्षेपमें कहा जा सकता है कि इस अवस्था में निरालाजी ने अपने आचार विचारो से अपनी बहुमुखी प्रतिभा तथा महत्वाकांक्षा का परिचय देना प्रारंभ कर दिया था. इस अवस्था में उन्हें अपेक्षित मातृस्नेह दैवत:, तथा पितृस्नेह स्वभावत: प्राप्त नहीं हो सका अत परिणामस्वरूप उनके व्यक्तित्व में एक विशेष प्रकार की स्वच्छंदता तथा स्वतंत्रता विकसित होने लगी थी. पारिवारिक स्नेह के अभाव के कारण संभवत: निरालाजी, स्नेह, सम्मान तथा श्रध्दा प्राप्त करने के लिये ही समाजोन्मुख हुए थे, परंतु इनकी प्राप्ती उन्हें जितनी होती थी, अथवा वे जितनी अपेक्षित रखते थे उस हद तक स्नेह आदि समाज तथा मित्र परिवार से उन्हे प्राप्त नही हुआ था. इसीलिये वे समाज से भी विमुख होने लगे थे. समाज की परवाह न करना उन्होंने इसी अवस्था मे सीख लिया था. इस प्रकार स्व-परिवार तथा समाज से निरपेक्ष हो जाने की वृत्ति, निरालाजी में इस अवस्था में ही मिलने लगती है. परिणाम स्वरूप आत्म-रति तथा एकान्त सेवन की प्रवृत्ति उनमें, इस अवस्थामें अंकुर रूप मे दृष्टिगत होती है. साथ ही अपने आग्रह या निर्णय पर अडिग रहने, तथा आवश्यकता होने पर विद्रोह कर उठने की क्षमता निरालाजी के व्यक्तित्व में प्रारंभ से थी.

( )

परिणाम स्वरूप आत्म-रति तथा एकान्त सेवन की प्रवृत्ति उनमें, इस अवस्थामें अंकुर रूप में दृष्टिगत होती है. साथ ही अपने आग्रह या निर्णय पर अडिग रहने, तथा आवश्यकता होने पर विद्रोह कर उठने की क्षमता निरालाजी के व्यक्तित्व में प्रारंभसे ही थी.[1]

२-२ किशोरावस्था - आयु १४ से २२ वर्ष : सन् १९१० ई. में निरालाजी का विवाह सम्पन्न हुआ. उस समय निरालाजी १४ वर्ष के थे, तथा उनकी पत्नी श्रीमती मनोहरादेवी ११ वर्ष की थीं.[2] मनोहरा देवी का जन्म रायबरेली जिले के डलमऊ नामक स्थान के एक संपन्न परिवार में हुआ था. उनका लालन-पालन बड़े प्यार और देखभाल के साथ हुआ था. बैंती की एक महाराजिन उनकी आर्जियन थी. निरालाजी के ससुर

---

१ - पांडेय गंगाप्रसाद : महाप्राण निराला -पृष्ठ २९-३०.
२ - निराला, चाबुक - पृष्ठ ११.
३ - वही : पृष्ठ १२.

पं०रामदयालजी द्विवेदी के भी दो विवाह हुए थे । उनकी प्रथम पत्नी श्रीमती परागादेवी के कोई सन्तान नहीं हुई,अत: उन्हीं के अनुरोध पर द्विवेदीजी ने दूसरा विवाह किया । उनकी दूसरी पत्नी से ही मनोहरा-देवी का जन्म हुआ।[१] यह एक संयोग ही है कि निरालाजी तथा उनकी पत्नी दोनों अपने पिता के दूसरे विवाह की सन्तानें थीं। अस्तु। मनोहरादेवी का जन्म अनेक दान-पुण्य तथा धार्मिक अनुष्ठान आदि के फलस्वरूप हुआ था,अत: उनका संगोपन विशेष देखभाल के साथ तथा लाड़-प्यार से होना स्वाभाविक था । परिणामस्वरूप उन्हें अच्छी शिक्षा-दीक्षा तथा संस्कार प्राप्त हुए ।

वस्तुत: ज्योतिष-शास्त्र के अनुसार यह विवाह नहीं बनता था। निरालाजी मंगली थे ।[२] परंतु किसी तरह उनके ससुरजी को समझाकर विवाह के लिये राजी किया गया । निरालाजी के पिता भी मनोहरादेवी को पुत्र-वधु बनाना चाहते थे अत: उन्होंने भी अपनी ओर से प्रयत्न किये ।[३]

निरालाजी के गार्हस्थ्य जीवन पर विचार करते हुए यह कहा जा सकता है कि,गृहिणी के रूप में श्रीमती मनोहरादेवी को प्राप्त कर,वे अपने अ आप को अत्यन्त सौभाग्यशाली समझते थे । परंतु अपनी पत्नी[४] के स्नेह का वास्तविक अनुभव वे मनोहरादेवी की मृत्यु के बाद ही कर सके । ~~तत्पश्चात्~~ उनके प्रति निरालाजी का आजीवन अपार स्नेह तथा आदर बना रहा । यद्यपि यह बात स्पष्ट रूप से कही जा सकती है कि दोनों के आचार एवं विचार में विशेष अन्तर था ।[५] निरालाजी की कुछ आदतों का उनकी पत्नी सदा विरोध करती रहीं-

---

१- 'सम्मेलन-पत्रिका श्रद्धांजली अंक' : पृष्ठ- ५१८

२- निराला : अनामिका- पृष्ठ-१२४ , चाबुक- पृष्ठ- १२

३- निराला : चाबुक- पृष्ठ- १२ , ४- निराला: कुल्लीभाट - पृष्ठ-७८

५-'सम्मेलन-पत्रिका श्रद्धांजली अंक : पृष्ठ- ३४६

रहीं। विशेष रूप से निरालाजी का मांसाहार उन्हें बिलकुल पसन्द न था।[1] इस संबन्ध में उनके द्वारा विरोध किये जाने पर निरालाजी ने कुछ समय के लिये मांसाहार छोड़ दिया था, परंतु बाद में शास्त्रोक्त प्रमाण देकर पुन: आरंभ कर दिया।[2] परिणामस्वरूप उनकी पत्नी को उनसे अलग अपने मायके में रहने को बाध्य होना पड़ा।[3] आशय यह कि निरालाजी की पत्नी प्राय: अपने मायके ही रहा करती थीं।[4] अत: उक्त तथ्य के आधार पर कहा जा सकता है कि निरालाजी को पत्नी-सुख विशेष पूर्णता तथा संतोष के साथ प्राप्त न हो सका। यद्यपि उनका एक उपकार वे कभी न भुला सके, वह यह कि मनोहरादेवी के ही आग्रह एवं प्रकाश से निरालाजी को हिन्दी का ज्ञान हुआ था।[5] मनोहरादेवी से निरालाजी को दो सन्तानें हुईं, श्री रामकृष्ण और श्रीमती सरोजदेवी।

सन् १६१६ में जब निरालाजी[6] की आयु लगभग २० वर्ष की थी, उनके पिता का स्वर्गवास हुआ। अत: परिवार के बोझ का वहन करने के लिये उन्होंने महिषादल राज्य में नौकरी स्वीकार कर ली।[7] कहा जाता है कि वे वहां के राजा साहब के प्राईवेट सेक्रेटरी के रूप में नियुक्त हुए थे।

१- निराला : चाबुक - पृष्ठ- ५६
२- वही : पृष्ठ - ५६-५७
३- वही : पृष्ठ - ५७ , ४- वही : पृष्ठ - ५७
५- निराला : गीतिका - गीतिका (प्रस्तावना)
६- सम्मेलन-पत्रिका श्रद्धांजली अंक : पृष्ठ- ३८२
७- पांडेय गंगाप्रसाद : महाप्राण निराला - पृष्ठ- ३३

सन १९१६ में निरालाजी की काव्य-प्रतिभा ने अपना अनूठा और क्रांतिकारी परिचय दिया. इस वर्ष उन्होंने खड़ी बोली में अपनी प्रथम कविता 'जुही की कली' लिखी.[1] यद्यपि इस कविता के रचना-काल के विषय में मतभेद है. कुछ आलोचकों के अनुसार यह कविता निरालाजी की पत्नि की मृत्यु के बाद लिखी गई है. परंतु अन्यत्र कहीं इस कथन की पुष्टि नहीं मिलती. अत: निरालाजी की उक्त प्रथम हिन्दी काव्य-रचना का रचना-काल १९१६ ही माना जा सकता है. निरालाजी ने इस प्रथम मुक्त-छन्द की रचना को 'सरस्वती' में प्रकाशनार्थ भेजा, परंतु उसके सम्पादक आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी द्वारा वह लौटा दी गई.[3] इसी समय से निरालाजी के साहित्यिक विरोध या अवरोध का सूत्र-पात माना जा सकता है. वस्तुत: इसी वर्ष से निरालाजी के पारिवारिक, सामाजिक, तथा साहित्यिक संघर्षों को भी प्रारंभ मानना चाहिये. परंतु स्वयं निरालाजी ने इसे १६-१७ वर्ष की आयु से माना है.

सन १९१७ में सरोज का जन्म हुआ.[5] इसके पश्चात् सन १९१८ में महामारी का भयंकर प्रकोप बंगाल में हुआ, जिसके परिणामस्वरूप निरालाजी का परिवार मृत्यु की भीषण छाया से घिर गया. उनकी पत्नी के अतिरिक्त इस महामारी में उनके परिवार के कई सदस्यों की मृत्यु हो गई. उनके परिवार में इस समय केवल पुत्र रामकृष्ण, पुत्री सरोज तथा चार भतीजें रह गये थे.[6] निरालाजी ने इन भतीजों -

---

१. - 'अन्तरवेद' : बसंत पंचमी - पृष्ठ - ४०.
२. - तिवारी गिरीशचन्द्र : कवि निराला और उनका काव्य-साहित्य. पृष्ट -४७.
३. - पांडेय गंगाप्रसाद : महाप्राण निराला - पृष्ठ -३३.
४. - 'संम्मेलन - पत्रिका श्रध्दांजली अंक - पृष्ठ -३८२.
५. - वही : पृष्ठ - ३८२.
६. - निराला: कुल्लीभाट-पृष्ठ-७८-७९, 'सम्मेलन-पत्रिका' श्र. अंक: पृष्ठ -५१८.

की देखभाल करने का वचन दिया था ।[१] परन्तु पत्नी की मृत्यु के समय वे निराला जी उनके निकट नहीं थे, निधन के बाद वहां पहुंच पाए थे।[२] उनके गार्हस्थ्य जीवन का यह अत्यन्त करुण अन्त था । निधन से पूर्व अर्थात् निरालाजी की अनुपस्थिति में श्रीमती मनोहरादेवी ने अपनी दोनों सन्तानों को माता के हाथों सौंप दिया था।[३] अतएव पुत्र तथा पुत्री को उनकी नानी के यहां रखकर निराला जी महिषादल लौट आए । इस प्रकार २२ वर्ष की आयु में पत्नी की मृत्यु के आघात के साथ निरालाजी पर ६ बच्चों के पोषण का उत्तरदायित्व आ पड़ा ।[४]

उक्त विवेचन के आधार पर निम्नलिखित तथ्यों की ओर संकेत किया जा सकता है :

१- निरालाजी के शोकमय जीवन में पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक तथा साहित्यिक संघर्षों का आरम्भ हुआ ।

२- उनके अहं को पुष्ट करने में तथा विद्रोह की भावना को तीव्र करने में, साहित्यिक अवहेलना[५] प्रमुख रूप से कारणभूत रही।

३- शोक, उत्तरदायित्व तथा संघर्ष द्वारा चिन्तनशीलता एवं एकाकीपन की वृद्धि हुई ।[६]

१- 'सम्मेलन-पत्रिका श्रद्धांजली अंक' : पृष्ठ-५१६

२- निराला : कुल्लीभाट - पृष्ठ- ७८ , चाबुक - पृष्ठ- ५८ ,
'सम्मेलन-पत्रिका श्रद्धांजली अंक' : पृष्ठ- ३५१-५१५

३- 'सम्मेलन-पत्रिका श्रद्धांजली अंक' : पृष्ठ- ५१४

४- निराला : कुल्लीभाट - पृष्ठ- ७८-७६

५- वही : पृष्ठ- ८६ , 'सम्मेलन-पत्रिका श्रद्धांजली अंक' : पृष्ठ- ३८२

६- निराला : कुल्लीभाट - पृष्ठ- ७६

२-२ <u>युवावस्था - आयु २२ से ४६ वर्ष :</u> एक ओर कवि और दूसरी ओर पुरुषार्थी निरालाजी, महिषादल राज्य की सेवा करते हुए अपनी प्रतिभा को नष्ट होने देते यह स्वाभाविक नहीं था. उन्हें नौकरी अच्छी नहीं लगती थी[1], साथ ही, सामन्तवादी समाज-व्यवस्था के प्रति उनके मन में विरोध और विद्रोह की भावना भी जन्म ले चुकी थी.[2] अत: वे प्राय: महिषादल राज्य के विरूध्द प्रजा का पक्ष लिया करते थे. इसकी प्रतिक्रिया यह हुई कि उन्हें राजा तथा राज्य के अन्य कर्मचारियों के कोप एवं षडयन्त्र का पात्र बनना पडा.

कहा जाता है कि किसी समय निरालाजी महिषादल के मंदिर के पुजारी थे. उस मंदिर के पिछवाडे एक सरोवर था, जिसमें राजकुमारी स्नान के लिये आया करती थी. उसके प्रति निरालाजी के बढते हुए आकर्षण का पता चलने पर उन्हें नौकरी से हटा दिया गया.[3] अन्यत्र यह बताया गया है कि निरालाजी के शत्रुओं ने उनके विरूध्द मंदिर की सोने की मूर्तियाँ चुराने का आरोप लगाया था. फलस्वरूप, कहा जाता है कि, उन्हें कुछ दिनों की कैद भी हुई थी. अंत में इस षडयन्त्र का भण्डाफोड हुआ और निरालाजी निर्दोष प्रमाणित हुए. इस घटना व्दारा अत्यन्त दु:खी एवं व्यथित होकर निरालाजी, पुन: महिषादल न लौटने के निश्चय के साथ कलकत्ता चले आए.[4] वास्तविकता कुछ भी हो, परंतु इतना निश्चित रूपसे कहा जा सकता है कि कुछ समय महिषादल में राज-सेवा कर वहाँ से असंतुष्ट हो, निरालाजी कलकत्ते आ गए थे.

---

१ - निराला : देवी, 'भक्त और भगवान' पृष्ठ - १६.
२.- वही : पृष्ठ -१६, तुल : पांडेय गंगाप्रसाद: महाप्राण निराला पृ-२४-२५.
३.- डा. प्रभाकर माचवे व्दारा प्राप्त सूचना.
४.- श्री मन्ना बाबू (बजबज, कलकत्ता) व्दारा प्राप्त सूचना.

निरालाजी हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओं में अपनी रचनाएं भेजते रहते थे. 'प्रभा' में उनकी रचनाएं छपती थीं. संयोगवश उसी समय कलकत्ते के श्री रामकृष्ण मिशन व्दारा संचालित 'समन्वय' नामक दार्शनिक-पत्रिका के लिये एक सम्पादक की आवश्यकता हुई. उक्त पद के लिये, आ. महावीर-प्रसाद द्विवेदी की संस्तुति से निरालाजी को 'समन्वय' का सम्पादकत्व प्राप्त हुआ. आशय यह कि निरालाजी महिषादल के राजनीतिक षडयन्त्र से तंग आकर, राज-सेवा छोडकर, सन १९२६ से 'समन्वय' के सम्पादक के रूप में कलकत्ते रहने लगे.[1] कुछ लोगों के अनुसार, एक बार महिषादल छोडकर समन्वय का का सम्पादकत्व स्वीकार कर लेने के बाद भी निरालाजी महिषादलवालों के निमन्त्रण पर पुन: वहां गये थे और तत्पश्चात् वहां के क्रूर व्यवहार से पीडित होकर पुन: कलकत्ते आए.[2] परंतु इस कथन की पुष्टि अन्यत्र नहीं मिलती. उक्त राज सेवा तथा कलकत्ते में 'समन्वय' के संपादकत्व के अतिरिक्त, खोज के महकमे में सी. आई. डी. अफसर,[3] तथा किशुनपुर के पोस्टमास्टर[4] के रूप में भी निरालाजी व्दारा कार्य किये जाने का उल्लेख मिलता है. यह भी कहा जाता है कि किशुनपुर के पोस्ट आफिस की नींव भी निरालाजी ने डाली थी.[5] इन सभी उल्लेखों पर विश्वास किया जाय तो कहा जा सकता है कि इस समय अपने परिवार के उत्तरदायित्वों के निर्वाहर्थ निरालाजी को विविध क्षेत्रों में विविध रूपों में कार्य करना पडा था. परंतु मूलत: और पूर्णत: साहित्यकार होने के कारण उनका मन साहित्य सेवा के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं भी नहीं लगा. इसीलिये अंतत: वे साहित्य सेवा की ओर ही उन्मुख हुए, आगे उनकी जीविका का एकमात्र साधन साहित्य सेवा ही दृष्टि-गोचर होता है.

---

१ - निराला : कुल्लीभाट-पृष्ठ 'अन्तर्वेद' : बसंत पंचमी पृ. १२.
२ - सम्मेलन पत्रिका श्रद्धांजली अंक पृष्ठ ५२०.
१ - पाडेय गंगाप्रसाद: महाप्राण निराला -पृष्ठ ३४-३५.
३ - निराला: प्रबन्ध-प्रतिमा -पृष्ठ -१२७.
४ - 'अन्तरवे' बसंत पंचमी - पृष्ठ ३८.
५ - वही : पृष्ठ ३८.

रामकृष्ण मिशन तथा उस संस्था के स्वामियों के निकट सम्पर्क में आए। विशेष रूप से स्वामी श्री शारदानन्दजी महाराज द्वारा वे बहुत प्रभावित हुए।[1] इसके अतिरिक्त भारतीय दर्शन का गंभीर अध्ययन भी निरालाजी ने इस काल में किया।

'समन्वय' में प्रकाशित निरालाजी की कविताओं तथा लेखों ने अनेक लोगों को प्रभावित किया, जिनमें कलकत्ते के बाबू महादेवप्रसादजी सेठ भी थे। वे 'मतवाला' नामक अत्यन्त अभिनव कोटी का पत्र निकालना चाहते थे। इस पत्र के सम्पादन के लिये उन्होंने उस समय के अभिनव कवि एवं साहित्यिक श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी जी को सर्वथा उपयुक्त समझा। अत: उनके आग्रह से निरालाजी १९२३ में 'मतवाला-मण्डल' के सदस्य हो गये, तथा उन्होंने 'मतवाला' का सम्पादन-कार्य स्वीकार कर लिया।[२१] 'मतवाला' के ही तुक पर उन्होंने अपना उपनाम 'निराला' रखा।[२२] इस कार्य द्वारा निरालाजी की साहित्यिक-प्रतिमा को विकसित होने का विशेष अवसर मिला जिसके लिये वे आजीवन बाबू म०सेठ के कृतज्ञ रहे। उन्हीं के शब्दों में - 'यदि वे न होते तो निराला भी न आया होता'।[२३] १९२३ में ही निरालाजी का प्रथम काव्य-संग्रह 'अनामिका' प्रकाशित हुआ।

निरालाजी की काव्य-रचनाओं ने हिन्दी-साहित्य में नवीन युग का सूत्रपात किया था, परंतु इसके लिये उन्हें कड़े विरोध का सामना करना पड़ा। काव्य में 'मुक्त-छन्द' का प्रयोग करने के कारण ही उनका (विरोध) सर्वाधिक हुआ। वस्तुत: भाव, भाषा, और शैली तीनों क्षेत्रों में उन्होंने क्रांतिकारी प्रयोग किये। काव्य

---

१ - निराला - प्रबंध-पद्म - स्वामी सारदानंद जी महाराज और मैं

२१- 'सम्मेलन-पत्रिका श्रद्धांजली अंक': पृष्ठ- ३८३-५२०

२२- निराला : 'अनामिका' - सं० २०१५ वि०- प्राक्कथन

२३- वही

के अतिरिक्त राष्ट्रीयता, धर्म, समाज आदि विषयों के संदर्भ में उनके मौलिक विचारों ने भी साहित्यिक जगत में हलचल मचा दी. आश्चर्य यह की क्रान्तिकारी निराला का व्यक्तित्व इस युग में निखार पा कर हिन्दी साहित्य के वायु मंडल को प्रभावित करने लगा था.

सन १९२६ में एक बार 'मतवाला-मण्डल' के सदस्यों के साथ निरालाजी का तीव्र मतभेद हुआ. उग्र वाद-विवाद के बाद निरालाजी ने 'मतवाला' का सम्पादन-कार्य त्याग दिया.[१] इस घटना से उनमें अत्यन्त विरक्ति की भावना जागृत हुई, और उन्होंने सन्यास ग्रहण करने का भी प्रयास किया, परंतु स्वामी शारदानन्दजी के उपदेशों के परिणामस्वरूप निरालाजी ने वह विचार छोड दिया.[२] एक ओर आर्थिक संकट बढ रहा था, दूसरी ओर सरोज के विवाह की समस्या बनी हुई थी. अंत में इसी वर्ष निरालाजी ने सरोज का विवाह सम्पन्न करने का निश्चय कर लिया. तदनुसार, अपने शिष्यों में से कलकत्ते के प. शिवशेखर द्विवेदी को उपयुक्त वर मानकर, सामाजिक रुढियों की विशेष चिंता किये बिना, केवल अपने आत्मविश्वास के बल पर अकेले हाथों[३] उन्होंने सरोज का विवाह कर डाला, जिससे कान्यकुब्जों मे खलबली मच गई. परिणामस्वरूप निरालाजी के लिये सामाजिक संघर्ष तथा विरोध और भी तीव्र हो गया. परंतु निरालाजीका सशक्त व्यक्तित्व इस तीव्र विरोध व संघर्ष को सह सका और विकसित होता गया.

श्री रामधनीजी को लिखे पत्र से ज्ञान होता है कि आर्थिक समस्या के अत्यन्त विकट बन जाने के कारण निरालाजी कलकत्ता छोडकर सन १९२७ में लखनऊ आएथे.[४] श्री राजेन्द्रसिंह गौड का यह कथन कि निरालाजी सन १९२८ में लखनऊ आए[५] ठीक नहीं है, यह निरालाजी के पत्र से स्पष्ट है, जिसका सन्दर्भ ऊपर दिया गया है. लखनऊ मे गंगा पुस्तकमाला के

१- 'सम्मेलन- पत्रिका श्रध्दांजली' अंक पृष्ठ ५२६.
२- वही : पृष्ठ ५२६. ३- वही पृष्ठ ५२६-५२८.
४- वही : पृष्ठ ५२८ (श्री रामधनी को लिखा पत्र)
५- वही : पृष्ठ ३८३.

प्रकाशक श्री दुलारेलाल भार्गव ने निरालाजी की विशेष रूप से सहायता की। निरालाजी के काव्य की तीव्र आलोचना, एवंविरोध के बावजूद भी उन्होंने सन् १९३० में निरालाजी का महत्वपूर्ण काव्य-संग्रह 'परिमल' प्रकाशित किया[1]। श्री राजेन्द्रप्रसाद गौड ने प्रकाशन का समय सन् १९२९ बताया है[2] जो ठीक नहीं है।

कलकत्ता छोड़ने के बाद लखनऊ निरालाजी के काव्य तथा साहित्य-सृजन का प्रमुख केन्द्र रहा। यहाँ रहकर उन्होंने अपने विरोधियों का सामना किया, तथा कविता के अतिरिक्त मौलिक उपन्यास, कहानी, निबन्ध तथा अनुवाद आदि का सृजन करते रहे जिससे उनकी आर्थिक समस्या भी कुछ हल हो जाती थी। परंतु सन् १९३५ में उन[3] पर और एक वज्रपात हुआ। इस वर्ष उनकी पुत्री सरोज का देहांत हो गया। फलस्वरूप उनका शोकमय और करुण जीवन और अधिक विषादग्रस्त हो गया, तथा इस आघात से फिर वे मृत्यु तक नहीं सम्हल पाए।

उक्त अनेक हृदय विदारक घटनाओं के अतिरिक्त निरालाजी का अपने पुत्र श्री रामकृष्ण के साथ वैमनस्य भी उनके जीवन की अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण घटना है। इस तथ्य पर निष्पक्षतापूर्ण विचार करना आवश्यक है। कहा जाता है कि निरालाजी जितना आदर[4] या सम्मान लोगों से अपेक्षित रखते थे, उससे अधिक अपने पुत्र से चाहते थे। पुत्र की ओर से सम्मानपूर्ण व्यवहार उन्हें क्यों नहीं मिल सका यह जानने के लिये श्री रामकृष्ण के जीवन की कतिपय घटनाओं का उल्लेख किया जा सकता है।

१- दे०, 'गीतगुंज' - निराला - प्रकाशन सूचि (निराला-साहित्य-प्रकाशन का वर्णानुक्रम)

२- 'सम्मेलन-पत्रिका श्रद्धांजली अंक': पृष्ठ- ३८३

३- पांडेय गंगाप्रसाद- महाप्राण निराला : पृष्ठ- ७२

४- वही : ३१७

श्रीमती मनोहरादेवी ने मृत्यु से पूर्व अपनी माता से आग्रहपूर्वक[1] यह कहा था कि वे श्री रामकृष्ण तथा सरोज को अपने ही पास रखें। चूँकि इस घटना के समय निरालाजी वहां नहीं थे। अतः उनकी अनुपस्थिति में किये गये उक्त आग्रह के मूल में यह कारण हो सकता है कि,कदाचित,निरालाजी की लापरवाही,जिद्दी स्वभाव,तथा खान-पान में स्वच्छन्दता आदि त्रुटियों का ज्ञान होने के कारण,मनोहरादेवी ने बच्चों के हित को ध्यान में रखकर उन्हें अपनी माता को सौंपना उचित समझा होगा। उनकी माताजी ने भी,जब तक बच्चे नासमझ थे,निरालाजी के बच्चों को साथ ले जाने के प्रस्ताव को कभी स्वीकार नहीं किया।[2] हो सकता है निरालाजी ने अपने बच्चों की यह व्यवस्था देखकर उनकी ओर विशेष ध्यान नहीं दिया होगा,और अपने संघर्षपूर्ण दैनंदिन जीवन में व्यस्त रहे होंगे। उनकी इस परिस्थितिजन्य विवशता ने यह धारणा बना दी कि वे अपने बच्चों के प्रति लापरवाह हो गये हैं। रामकृष्णजी के ननिहाल में उनकी नानी आगंतुकों से सदा यही कहती थीं कि- ये राममनोहर(मनोहरादेवी)के बच्चे हैं,येबच्चे अनाथ हैं,इनकी परवरिश करनेवाला कोई नहीं,यह थाती हमें सौंपकर उसने प्राण छोड़े थे[3] आदि। इसके फलस्वरूप निरालाजी संबन्धी लोगों की उक्त धारणा बद्धमूलहोती गई और बालक रामकृष्ण के मन पर यह प्रभाव पड़ता रहा कि वे अनाथ हैं। पिता के अस्तित्व की या उनके संरक्षण की कोई चेतना उनमें वर्षों तक नहीं रही,और इसके विपरीत निरालाजी के प्रति डर की भावना उत्पन्न होती गई।[4] वस्तुतः वे अपने मामा तथा मामी को ही अपना

१- 'सम्मेलन-पत्रिका श्रद्धांजली अंक': पृष्ठ- ५१४

२- वही : पृष्ठ- ५१८

३- वही : पृष्ठ- ५१८

४- वही : पृष्ठ- ५१८

सब कुछ समझने लगे ।[१] रामकृष्णाजी के अनुसार जिन्हें उनके और सरोज के पालन-पोषण के लिये कठोरतम संघर्षों से जूझना पड़ा, वे नाना-नानी तथा मामा थे, निरालाजी नहीं ।[२] कभी-कभी डलमऊ आने पर निरालाजी अपने बच्चों के साथ हिलते-मिलते थे, परंतु इससे रामकृष्ण के बाल-मानस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था । परिणामस्वरूप उनके हृदय में पिता के प्रति जो प्रेम, श्रद्धा और भक्ति होनी चाहिये थी उसके लिये स्थान ही न था ।[३] पिता की अपेक्षा नानी तथा मामा के प्रति उनकी आस्था दृढ़ होती गई । आशय यह कि उक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बाल्यकाल से ही रामकृष्णाजी निरालाजी के प्रति पूर्वग्रहदूषित तथा उनसे विमुख हो गये थे ।

दिन-प्रतिदिन संघर्षरत रहने के कारण निरालाजी सरोज की विवाह-समस्या की ओर विशेष ध्यान नहीं दे पाते थे । फलस्वरूप वे और भी अधिक लापरवाह समझे जाने लगे । स्वयं रामकृष्णाजी ने उन्हें उक्त स्थिति के संदर्भ में लापरवाह कहा है ।[४] जहां तक रामकृष्णाजी के विवाह का प्रश्नथा, निरालाजी आरंभ में उसके पक्ष में नहीं थे । वे यह मानते थे कि सुख से रहना हो तो विवाह के झमेले में नहीं पड़ना चाहिये ।[५] परंतु, रामकृष्णाजी के कथनानुसार, निरालाजी के एक मित्र की कन्या का विवाह नहीं बन रहा था । अपनी समस्या को निरालाजी के सम्मुख रखने पर उन्होंने मित्र को इस संबन्ध में सहायता करने

१- 'सम्मेलन-पत्रिका श्रद्धांजली अंक': पृष्ठ- ५१८

२- वही : पृष्ठ- ५१८

३-वही : पृष्ठ- ५१६

४- वही : पृष्ठ- ५२१

५- वही : पृष्ठ- ५२०

का आश्वासन दिया. तत्पश्चात्, उस कन्या से विवाह-बध्द होने के लिये उन्होंने रामकृष्णाजी से आग्रह किया परंतु राकृष्ण जी पहले तो सहमत नहीं हुए, पर अंत में निरालाजीके यह कहने पर कि यह कार्य करने से रामकृष्ण अपने पिता के ऋण से उऋण हो सकते है. रामकृष्णाजी को अनिच्छा से सम्मति देनी पडी.[१] आशय यह कि इस विवशतापूर्ण विवाह के फलस्वरूप, संभव है, रामकृष्णाजी के मन मे पिता के प्रति असंतोष की भावना उत्पन्न हुई हो.

सरकारी नौकर होने के कारण रामकृष्णाजी विभिन्न स्थानों पर घूमते रहते थे. उनके कथनानुसार, वे यदि कभी निरालाजी के पास आते और रहते थे, तो कुछ दिनों बाद निरालाजी उन्हें वापिस लौट जाने के लिये कह दिया करते थे.[२] आश यह कि इस अवस्था में भी रामकृष्णाजी निरालाजी के साथ अधिक समय के लिये प्राय: कभी न रह पाए. फलस्वरूप सदा उनको अपने पिता से दूरी बनी रही. दूसरी ओर अत्यन्त उदारमना ओने के कारण कभी कभी निरालाजी गहना आदि मूल्यवान वस्तुए दूसरो को दे दिया करते थे[३] जिसके कारण रामकृष्णाजी का असंतोष और बढता था. इसके अतिरिक्त अपने रूढि-मुक्त जीवन एवं व्यवहार के कारण निरालाजी को कान्यकुब्ज-समाज में उचित प्रतिष्ठा नहीं मिलती थी. परिणामस्वरूप रामकृष्णाजी को भी उक्त समाज के रोष एवं असहयोग का सामना करना पडता था.[४] अत: हो सकता है इस दृष्टि से भी उनके मन में पिता के प्रति कटुता उत्पन्न हुई हो.

उक्त विवेचन के आधार पर यह कहना अनुचित न होगा कि वस्तुत: निरालाजी तथा उनके पुत्र के बीच दीवार खडी होने में परिस्थितियां बहुत हद तक कारणभूत रहीं. साथही निरालाजी का असामान्य व्यक्तित्व भी इसके लिये उत्तर-दायी माना जा सकता है. उक्त स्थिति के बावजूद भी निरालाजी

१- प्रस्तुत लेखक की शोध-यात्रा के अन्तर्गत श्री रामकृष्ण के साथ की गई
२- चर्चा द्वारा प्राप्त सूचना.
२- वही. ३- वही, ४- वही.

Smt. HANSA MEHTA LIBRARY
THE M. S. UNIVERSITY OF BARODA
51

द्वारा श्री रामकृष्ण को लिखे हुए पत्रों से यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने अंत तक रामकृष्ण तथा उनके परिवार के प्रति स्नेह रखा, तथा सदैव उनके प्रति अपने कर्त्तव्य को निभाते रहे।[1]

गृह-परिवार के अतिरिक्त मित्र-परिवार की ओर से भी निराला जी को प्राय: असंतोष मिलता रहा। मित्रों की संख्या कम नहीं थी परंतु व्यावहारिक जीवन में निरालाजी के खान-पान संबन्धी मुक्त व्यवहार, तथा उनके असामान्य व्यक्तित्व के कारण मित्रों की ओर से सहानुभूति या स्नेह के स्थान पर उन्हें उपेक्षा एवं अवहेलना मिलती रही। साहित्यिक-क्षेत्र में, असामान्य काव्य-प्रतिभा तथा मुक्त-छन्द के प्रणयन के फलस्वरूप निरालाजी को प्राय: मित्रों की ईर्ष्या तथा मज़ाक का शिकार बनना पड़ता था, किंतु फिर भी उनके प्रति निरालाजी का मन कभी कलुषित नहीं हुआ। यद्यपि उक्त स्थिति के कारण वे और अधिक अंतर्मुखी होते गए, और अकेलापन अनुभव करने लगे।

इस समय निरालाजी प्राय: अस्वस्थ रहते थे। परंतु इसी काल में वे विशेष लैंगिक रोग के कारण भी बहुत पीड़ित रहे थे। कहा जाता है कि वे कलकत्ते में गाना-बजाना सुनने जाया करते थे। यहीं से उन्हें उक्त रोग लग गया था। इस अवस्था में उनकी शारीरिक पीड़ा आदि का वर्णन श्री लक्ष्मीनारायण मिश्र ने किया है।[2]

उक्त विवेचन के आधार पर निम्नलिखित तथ्यों की ओर संकेत किया जा सकता है :

१- शर्मा रामविलास : निराला - पृष्ठ- २१०-२११

२- 'सम्मेलन-पत्रिका श्रद्धांजली अंक' : पृष्ठ- ३१४

१) इस अवस्था में निरालाजी को अत्यन्त शोकमय तथा संघर्षपूर्ण काल से गुजरना पडा.

२) सरोज की मृत्यु, पुत्र के साथ वैमस्य, तथा मित्र-द्रोह आदि के परिणामस्वरूप उनका अकेलापन बढता गया.

३) शारीरिक पीडा एवं मानसिक बेचैनी के फलस्वरूप जीवन में अस्थिरता बढती गइ.

४) घोर विरोध, उपेक्षा, और अपमान के कारण अहं की वृध्दि हुई और विद्रोहात्मकता का पोषण हुआ.

५) सामाजिक ढोंग तथा गुरूडम के विरूध्द कठोर व्यंग का परिचय दिया.

६) बढती हुई चिन्तनशील ता के साथ विरक्ति और सन्यास की भावना विशेष रूपसे उदित होने लगी थी.

२-४ <u>प्रौढ तथा वृध्दावस्था - आयु ४६ से ६५ वर्ष</u> : कहा जाता है कि सन् १९४२ में सन्यास ग्रहण करने के बाद निरालाजी प्रयाग चले आए. यहाँ श्रीमती महादेवी वर्मा आदि आदि के प्रयास से स्थापित 'साहित्यकार- संसद' में कुछ समय रहने के पश्चात् वहाँ से ऊबकर वे अपने चित्रकार मित्र श्री कमलाशंकर सिंह के यहाँ दारागंज चले आए और अंत तक वही रहे.[१] इस अवस्था में वे शारीरिक रोगों से ग्रस्त हो गय थे तथा मानसिक अस्वस्थाता का परिचय देने लगे थे. कहा जाता है कि इस अवस्था मे वे विक्षिप्त हो गये थे.

१- शोध- यात्रा के अंतर्गत श्री कमलाशंकर सिंह, तथा डॉ. शिवगोपाल मिश्र, प्राप्त सूचना.

परंतु कुछ लोग यह भी मानते थे कि निरालाजी का दैनिक जीवन पूर्णतः सामान्य था, साथ ही अंतिम दिनों में भी वे काव्य साधना का कार्य सामान्य रूपसे करते रहे, अतः उन्हें विक्षप्त नहीं कहा जा सकता. अतः इस विषय में यहां विशेष रूप से विचार किया जा सकता है..

आधुनिक मनोविज्ञान के अनुसार जो आचरण पारम्परिक आचरण से भिन्न है उसे ' न्युरोटिक ' आचरण कहा जाता है. पारम्परिक आचरण से यदि यह भिन्नता अधिक तीव्र होती है तो उसे ' साईकोटिक ' आचरण कहा जाता है. वस्तुतः कानूनी दृष्टि से साईकोटिक-व्यक्ति उसे कहते है - १ - जो सामाजिक दृष्टि से दूसरों के अनुकूल न हो, २- जो अपने आचरण के लिये नैतिक दृष्टि से उत्तरदायी न हो, ३- जिसके लिये सहायता अपेक्षित हो, सामान्यतः प्रथम दो मानदण्ड न्युरोटिक आचरण के विषय में मान्य नहीं किये जाते.

इस अवस्था में निरालाजी के दैनिक जीवन तथा आचरण सम्बन्धी सूचनाओं के अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि निरालाजी की मानसिक अस्वस्था को ' न्युरोसिस ' की श्रेणी में ही रखा जा सकते है. इस अवस्था में उनका सामान्य आचरण यदा कदा पारम्परिक आचरण से भिन्न हुआ करता था. उदाहरणार्थ - समूह में वार्तालाप करते समय एकाएक चुप होकर मन ही मन बडबडाने लगना, बातचीत करते हुए अथवा अन्यथा एकाएक अट्टहास कर उठना, कोई कार्य करते समय अथवा बातचीत के दौरान एकाएक उठकर बाहर चल देना, आदि तथ्यों के इस का प्रमाण माना जा सकता है. परंतु उनके तथाकाथित विशिष्ट या विचित्र आचरण द्वारा कभी किसी को हानि

---

1. Lundin Robert W., Personality - an Experimental Approach, 1963, P,336.
2. Ibid, P. 365.

नहीं पहुंची. उनके द्वारा कभी कोई अनैतिक कृत्य नहीं हुआ. स्त्री, पुरूष, बच्चे, अतिथि आदि सबके प्रति वे उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार किया करते थे. यहां तक कि श्री कमलाशंकर सिंह के कथनानुसार निरालाजी का दैनंदिन कार्य-क्रम भी प्राय: व्यवस्थित हुआ करता था. अत: कहा जा सकता है कि निरालाजी इस समय न्यूरोसिस से पीडित अवश्य थे. परंतु उन्हें ~~न्यूरोटिक~~ पूर्णत: विक्षिप्त नहीं कहा जा सकता.

यहां यह भी जान लेना आवश्यक प्रतीत होता है कि 'न्युरोसिस' का मूलभूत कौनसा कारण होता है.

मनोविज्ञान की दृष्टि से प्राय: 'न्युरोसिस' के मूल मे 'संघर्ष' कारण-भूत रहता है. सामान्यत: जब किसी व्यक्ति के मन मे सघर्ष निरन्तर बना रहता है, अर्थात संघर्ष से छूटने या उसे टालने का कोई अवसर प्राप्त नही होता और तब शनै: २ उस व्यक्ति में न्यूरोसिस विकसित होने लगता है. वैद्यकीय प्रमाणों के आधार पर भी इस की पुष्टि होती है कि न्युरोटिक -आचरण एका एक किसी व्यक्ति में विकसित नहीं होता. इस प्रकारके आचरण के लक्षणों का विकास अत्यधिक संघर्षों से घिरे रहने के परिणामस्वरूप शनै: शनै होता है. मनोविज्ञान के अनुसार इस प्रकार के आचरण का आरंभ प्राय: बाल्यकाल से हो जाता है.[1]

निरालाजी के जीवन चरित्र के अध्ययन के आधार पर यह बलपूर्वक कहा जा जा सकता है कि उनके परवर्ती जीवन में विशेष रूप से दृष्टिगत न्युरोटिक आचरण के मूल में सघर्ष ही था. संक्षेप मे, उनके जीवन-संघर्ष का स्वरूप निम्मलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है.

१) निरालाजी का प्रकृति अथवा भाग्य के साथ संघर्ष: बाल्यकाल से --ही उन्हें,

---

1. Lundin Robert W., Personality - an Experimental Approach, 1963, p.345.

प्रकृति के कोप का भाजन बनना पडा. प्रथम माता का स्वर्गवास, बाद में पत्नी सहित प्राय: पूरे परिवार का करूण अन्त, तत्पश्चात् सरोज की मत्यु, इस प्रकार उन्हें निरन्तर प्रकृति द्वारा प्रदत्त आपत्तियों से संघर्ष पडा.

२) निरालाजी का समाज के साथ संघर्ष: बताया जा चुका है कि बाल्यकाल से वे स्वतन्त्र स्वभाव के थे, अत: विद्रोहात्मकता आरंभ से ही दृष्टिगोचर होती है. प्रथम, सामन्ती शासन तथा सामन्ती समाज-व्यवस्था के विरूध्द, फिर अपनी अपारम्परिकता के फलस्वरूप कान्यकुब्जों के विरूध्द और अंत में अपने असामान्य व्यक्तित्व के कारण कभी कभी अपने स्वकीयों के विरूध्द भी विविध रूपों में वे सामाजिक संघर्ष का परिचय देते रहे.

३) निरालाजी का 'स्व' के साथ संघर्ष : बाहरी संघर्ष जितना तीव्र होता था, उतना ही निरालाजी का अन्त: संघर्ष बढ जाया करता था. एक और उनका आत्म-विश्वास और दूसरू और उनकी योग्यता तथा प्रामाणिकता की उपेक्षा, इन दोनों मे बराबर संघर्ष बना रहता था. परिणाम-स्वरूप प्राय: वे अपने आप को और अधिक कष्ट में डाल दिया करते थे, और यह आत्म-पीडन ही उनके मानस पर विपरित प्रभाव डालता गया. परंतु इसी अदम्य आत्म-विश्वास तथा अहं के कारण वे टूटे नहीं, और मानसिक अस्वस्थता के बावजूद सदा आचार-विचार की उच्चता बनाये रहे. साथ ही एक ओर वे अपनी तुलना रवीन्द्र, शेक्सपीयर, नहरू आदि के साथ किया करते थे, परंतु दूसरी और व्यावहारिक रूप में न उन्हें हिन्दी-जगत रविन्द्र या शेक्सपीयर सी प्रतिष्ठा देता था, न समाज में नहरू जैसी ख्याती मिली, और न उनके जीते जी भारत के राष्ट्रपति ने उनका सम्मान किया. अत: यह असंतोष भी उनके मानसिक संघर्ष का कारण बना, करता था.

इसके अतिरिक्त एक द्वन्द्व यह था कि एक ओर वे समाज तथा जीवन के प्रति प्राय: आदर्शवादी या अतिआदर्शवादी अथवा काल्पनिक(युटोपियन) विचार रखा करते थे,परंतु स्वत: अभावग्रस्त होने के कारण सदा अपने आदर्श को प्राप्त करने में अपने आप को अक्षम पाते थे । परिणामस्वरूप वे प्राय: मन ही मन क्षुब्ध रहा करते थे । उक्त स्थिति के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्राय: वे सामाजिक असंतोष से त्रस्त रहा करते थे । इसके अतिरिक्त यह कहना भी अनुचित न होगा कि वस्तुत: उन्होंने अपने अतिआदर्शवाद को मार्क्स के अतिआदर्शवाद से जोड़ना चाहा,अथवा दूसरे शब्दों में उन्होंने भारतीय अद्वैतवाद का मार्क्स के द्वन्द्वात्मक-भौतिकवाद या द्वैतवाद के साथ समन्वय करना चाहा,और यह न कर पाने के कारण उनमें सदा अन्तर्द्वन्द्व बना रहा ।

अंतिम दिनों में उनके मन ही मन बड़बडाने का मूल कारण उनका अकेलापन था । उनसे एक बार पूछने पर कि वे मन ही मन क्यों बोलते हैं,उन्होंने यह स्वीकार किया था अपने अकेलेपन को दूर करने वे बड़बडाते हैं ।[१] इस अकेलेपन से ऊबकर कभी वे मित्रों या अतिथियों में खो जाने का प्रयास करते थे,परंतु उन्हीं से ऊबकर पुन: एकान्त में चले जाते थे । संतोष उन्हें दोनों स्थितियों में नहीं मिलता था। फलस्वरूप वे और अधिक अन्तर्द्वन्द्व से संत्रस्त रहे सन्तप्त गये ।

किशोरावस्था में पत्नी की मृत्यु के बाद वे अविवाहित रहे । परंतु कहा जाता है कि कलकत्ते में वे वेश्याओं के यहां गाना आदि सुनने जाया करते थे,वहीं से उन्हें सिफलिस या गनोरिया नामक रोग हो गया,जिसके परिणामस्वरूप उनका मानसिक सन्तुलन बिगड़ गया । उक्त रोग के कारण वे काम की तीव्रता अनुभव करने पर भी उसे तृप्त न कर पाते थे सके,अत: उनके हृदय में इस द्वन्द्व ने भी उन्हें

१- श्री कमलाशंकर सिंह द्वारा प्राप्त सूचना

अंतर्द्वन्द्व
कामज अंतर्द्वन्द्व बना रहता था. इस अन्तर्द्वन्द्व ने भी उन्हें मानसिक क्षति पहुंचाई.

आशय यह कि बाल्यकाल से लेकर लगभग प्रौढावस्था के अंत तक निरालाजी को सदा संघर्ष और द्वन्द्व का सामना करना पड़ा. परिणामस्वरूप लगभग युवावस्था के मध्य से उनके न्युरोटिक आचरण के लक्षण मिलने लगते हैं. इससे पूर्व की अवस्थाओं में उक्त आचरण के प्रमाण नहीं मिलते. अत: बाल्यावस्था से अंतिम अवस्था तक उनके न्युरोटिक आचरण का विकासात्मक रूप इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है.

निरालाजी की अंतिम अवस्था का अध्ययन करने पर इस तथ्य का उल्लेख किया जा सकता है कि उन्हें जिस प्रतिष्ठा या ख्याति की आरंभ से महत्वाकांक्षा थी, वह इस अवस्था में पूर्ण हो गई थी. सर्व सम्मत रूप से वे युगदृष्टा, क्रान्तदर्शी, युगकवि आदि रूपों में प्रमाणित किये जाने लगे थे. परंतु इस अवस्था में वे उस अनासक्त योगी की स्थिति को प्राप्त कर चुके थे जिसके आगे मान-प्रतिष्ठा, यश-ख्याति आदि का कोई मूल्य नहीं होता.

उक्त विवेचन के आधार पर निम्नलिखित तथ्यों की ओर संकेत किया जा सकता है :

१) इस अवस्था में दृष्टिगत उनकी मानसिक अस्वस्थता का मूल कारण उनका जीवन-संघर्ष था, जिसके परिणामस्वरूप उनके आचरण में 'न्युरोसिस' के लक्षण दिखाई देने लगे थे.

२) शारीरिक तथा मानसिक अस्वस्था के बावजूद निरालाजी का साहित्य-सृजन अखण्ड रूप से चलता रहा.

३) भौतिक जीवन और समाज के स्थान पर अध्यात्म संबन्धी चिंतन-मनन की प्रवृत्ति अपेक्षाकृत अधिक हो गई थी.

---

४) इस अवस्था में अकेलेपन की तीव्रता अत्यन्त प्रबल हो गई थी।

उपरोक्त विवेचन के रूप में निरालाजी के व्यक्तित्व का विकासात्मक अध्ययन कर लेने के पश्चात्, उसे दृष्टि में रखते हुए निरालाजी के 'महाव्यक्तित्व' का स्वरूप निम्नलिखित अध्ययन द्वारा देखा जा सकता है।

३- निराला - महाव्यक्तित्व :

३-० निम्नलिखित मनोवैज्ञानिक मानदण्डों के आधार पर निरालाजी के महाव्यक्तित्व की व्याख्या की जा सकती है। प्रस्तुत अध्ययन की अधिकांश सामग्री निरालाजी के निकट संबन्धियों, मित्रों व परिचितों से प्राप्त सूचनाओं पर आधारित है (देखिये परिशिष्ट-१)। प्रकाशित सामग्री के उपयोग का सन्दर्भ यथास्थान दिया गया है।

३-१ वृत्तियां (Drives) :

१) प्राकृत जीवन का स्वीकार :- अ) महाव्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्तियों में भौतिक धरातल पर निम्नलिखित विशेषताएं, मानी जाती हैं -

---

स्वस्थ क्षुधा, स्वस्थ निद्रा तथा पूर्ण भोग-विलास । अर्थात् विशिष्ट स्वाद, स्थान या स्थिति का आग्रह न रखकर ये व्यक्ति उक्त मूलभूत वृत्तियों का स्वस्थ रूप में भोग करते हैं । अर्थात् वे जीवन के सहज तथा स्वाभाविक क्रम को बिना किसी आग्रह या गुरुडम के स्वीकार कर लेते हैं ।[1]

निरालाजी की बाल्यावस्था से संबन्धित प्राप्त जानकारी के आधार पर उक्त गुण का प्रमाण निश्चित रूप से नहीं दिया जा सकता । परंतु उनकी किशोरावस्था, युवावस्था तथा वृद्धावस्था में उक्त गुण देखा जा सकता है। स्वतः भोजन पकाकर खूब खाते थे[१२] यदि भोजन न मिलता था तो केवल चने खाकर भी संतुष्ट रहते थे । चिन्ताओं से घिरे रहकर भी आवश्यकता होने पर आराम से सोते थे । रुपये होने पर, नये कपड़े सिलवाकर, बालों में इत्र की शीशी उंडेलकर बाहर निकला करते थे, अन्यथा अर्थ-संकट के समय केवल तहमद लगाकर, नंगे पांव, बिखरे बाल या घुटे हुए सिर से भी उतनी ही मस्ती में घूमा करते थे । आशय यह कि निरालाजी अपनी जीवन-व्यवस्था को उसके प्रत्यक्ष, प्राकृत और सहज रूप में स्वीकार कर लेते थे, संकोच या हठाग्रह से परिचालित होकर उसे कृत्रिम अथवा अप्राकृत नहीं बना लेते थे । अतः यह उनके महाव्यक्तित्व को प्रमाणित करता है ।

२) प्रेम और काम का परस्पर विलयन :- अ) महाव्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्ति, सामान्य आहार के समान मैथुन को भी मूलभूत आवश्यकता के रूप में स्वीकार कर काम(सैक्स) का आनन्द लेते हैं, परंतु यह वृत्ति उनके जीवन-दर्शन में केन्द्रीय स्थान नहीं रखती ।[३]

---

1 Maslow A.H., Motivation and Personality, page . 207.

१- निराला : चाबुक - पृष्ठ- १३

3 · Maslow A.H. Motivation and Personality, 1954, p. 243.

निरालाजी ने अपने जीवन में कभी भी काम को केन्द्रीय स्थान नहीं दिया था. कहा जाता है कि वे शाक्त थे तथा बंगाल में रहने के कारण उनकी देवी के प्रति भक्ति-भावना का पोषण हुआ था. अपनी माता, पत्नी एवं पुत्री के प्रति उन्होंने सदैव उदात्त भावना का परिचय दिया था. आशय यह कि नारी-समाज के प्रति उनका काम-शून्य दृष्टिकोण तथा व्यवहार रहा करता था.[१] यद्यपि अपनी युवावस्था में उन्होंने एक मूलभूत आवश्यकता के रूप में काम-तृप्ति का प्रयास किया था.

ब) प्राय: ये व्यक्ति प्रेम के अभाव में भी मैथुन का स्वीकार कर सकते हैं, वैसे ही जैसे मैथुन के अभाव में प्रेम बनाए रख सकते हैं.[२]

निरालाजी की कुछ आदतों के कारण, किशोरावस्था में प्राय: उनकी पत्नी अपने मायके रहा करती थीं.[३] इस अवस्था में दोनों का परस्पर प्रेम होने पर भी, निरालाजी मैथुन के अभाव में रह सकते थे. परंतु पत्नी की मृत्यु के पश्चात् में, उन्होंने वेश्या-संबन्ध द्वारा प्रेम के अभाव में काम-तृप्ति का अनुभव किया था.

क) आशय यह कि इन व्यक्तियों में शारीरिक काम-भावना और प्रेम का प्राय: एक दूसरे में परस्पर विलयन पाया जाता है, अर्थात् मैथुन की इच्छा को ये व्यक्ति, औसत व्यक्ति की तुलना में प्राय: एक साथ (Simultaneously) कम या अधिक महत्व दे सकते हैं.[४] निरालाजी ने अपने जीवन में इस वैशिष्ट्य का परिचय दिया था. अत: उक्त गुण के आधार पर निरालाजी का महाव्यक्तित्व सिध्द होता है.

---

१ - सम्मेलन-पत्रिका श्रध्दांजली अंक : पृष्ठ ४११:४३६.

२ - Maslow A.H., Motivation and Personality, P. 242.

३ - निराला चाबुक - पृष्ठ ५७.

४ - Maslow A.H., Motivation and Personality P. 241-242.
Schwarz Oswald, The Psychology of Sex, Penguin Books 1951, p. 21.

३-२ स्वभाव (*Temperament*) :

१) स्वयंस्फूर्तता :- अ) महाव्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्तियों में ये गुण देखे जा सकते हैं - सादगी, सहजता, तथा कृत्रिमता का अभाव ।[1]

निरालाजी का जीवन निश्चय ही सरल, सादा तथा कृत्रिमता से रहित था । वस्तुत: उनके पास यदि धन आता भी था, तो उसे वे बांट दिया करते थे । विलासी जीवन जीने की उनकी वृत्ति ही नहीं थी ।

ब) इन व्यक्तियों की आचरण पद्धति में छिछलेपन का अभाव होता है, अर्थात् वह सारगर्भित तथा परिपक्व होती है । उनके आचार-विचार रूढ़िमुक्त, स्वयंस्फूर्त तथा स्वाभाविक होते हैं । यह जानते हुए भी कि समाज उन्हें तथा उनके कार्यों को नहीं समझ सकता, वे अपने आचार-विचारों पर दृढ़ रहते हुए किसी को हानि पहुंचाए बगैर या लड़ाई-झगड़ा किये बगैर प्राय: परम्परागत संस्कार, तथा धार्मिक आचार इत्यादि का शिष्टतापूर्वक स्वीकार कर लेते हैं ।[2]

कतिपय सामाजिक रूढ़ियां तोड़कर, समाज की आलोचना या विरोध की परवाह न करते हुए भी निरालाजी ने किसी को हानि पहुंचाए बगैर, धार्मिक विधियों का पालन करते हुए सरोज का विवाह सम्पन्न किया था ।[3] पुत्र रामकृष्ण के विवाह में उन्होंने परम्पराओं की उतनी उपेक्षा भी नहीं की थी । इसके अतिरिक्त उनके पत्रों द्वारा भी स्पष्ट होता है कि वे अपने कौटुम्बिक व्य-

---

1 Maslow A.H. Motivation and Personality 1954, p. 208.
~~१- सम्मेलन-पत्रिका-श्रद्धांजली-अंक : पृष्ठ - ५२७~~

2 Maslow A.H. Motivation and Personality 1954, p. 209.

3. 'सम्मेलन - पत्रिका श्रद्धांजली अंक' : पृष्ठ - ५२७

व्हारों मे सामाजिक रूढ़ियों का पूरा ध्यान रखते थे. आशय यह कि जीवन के सभी कार्यों में निरालाजी की सारगर्भित तथा प्रौढ आचरण पद्धति, तथा उनके आचार-विचार की स्वभाविकता एवं स्वयंस्फूर्तता के प्रमाण मिलते है.

क) इन व्यक्तियों की रूढिमुक्तता तभी प्रकट होती है जब उनकी दृष्टि से मूलभूत तथा महत्वपूर्ण मूल्यों पर रूढि द्वारा आघात हुआ हो.[२]

निरालाजी ने उक्त गुण का प्रमाण सरोज के विवाह के समय दिया था.

ड) इन व्यक्तियों की आचरण-संहिता या नीति-संहिता अपेक्षाकृत आत्मनिष्ठ तथा स्व-संचालित होती है, परम्परागत नहीं. इस दृष्टि से, ढोंग तथा गुरूडम के विपरीत उनका आचरण होने के कारण उनकी नैतिकता सामान्य जन की नैतिकता से मेल नहीं खाती.[३]

खान-पान तथा औपचारिकता आदि के सबन्ध में निरालाजी ने सामाजिक परम्परा या आचरण-संहिता का उल्लंघन प्राय: अपने जीवन काल में किया था.[४] बाल्यकाल में यह उल्लंघन अपने स्वतन्त्र स्वभाव के कारण हुआ था, जब कि परवर्ती जीवनकाल में प्राय: विरोधियों को चिढाने तथा उनके ढोंग एवं गुरूडम पर चोट करने के हेतु भी, सामाजिक आचरण-संहिता का उल्लंघन कर उन्होंने अपनी आत्मनिष्ठाता का परिचय दिया था. वे, केवल स्व-मान्य सिध्दांतों के अनुकूल, परम्परा या आचारण को अपनाते थे, उसके प्रतिकूल का उल्लंघन कर विद्रोह का

१- 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान': ११ फरवरी १९६२ पृष्ठ- ११

२- Maslow A.H., Motivation and Personality ,1954, P. 209.

३- Maslow A.H., Motivation and Personality, 1954, P. 209,210.

४- निराला - कुल्लीभाट - पृष्ठ ३६-४०.

परिचय देते थे । अत: इस प्रकार ढोंग या बनावटीपन के विपरीत उनका आचरण होने के कारण उनकी नैतिकता सामान्य जन की नैतिकता से मेल नहीं खाती थी ।

निरालाजी में प्राप्त उक्त वैशिष्ट्य के कारण वे महाव्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्ति प्रमाणित होते हैं ।

३-३ बोध (Perception) :

१) वास्तविकता के बोध की दक्षता :- अ) महाव्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्तियों में, अन्य व्यक्तियों में निहित मिथ्यापन, बनावट तथा अप्रामाणिकता को ढूंढ निकालने की अपूर्व क्षमता होती है, और सामान्यत: ये लोगों के विषय में दक्षतापूर्वक सही निर्णय ले सकते हैं ।[1]

निरालाजी में यह क्षमता थी कि वे प्राय: लोगों के विषय में सही निर्णय ले सकते थे । अपने जीवनकाल में, अनेक मित्रों और स्नेहियों में कौन प्रामाणिक या अप्रामाणिक है, यह वे अवश्य जान लेते थे । परंतु वे कभी पूर्वग्रहदूषित नहीं रहे । वे व्यक्ति या वस्तुस्थिति के साथ वास्तविकता के आधार पर व्यवहार किया करते थे । वे विरोधियों के गुणों की भी सराहना किया करते थे, तथा उन्हें सम्मान देते थे । आ० रामचन्द्र शुक्ल, श्री सुमित्रानन्दन पंत आदि की प्रशस्तियां इसकी उदाहरण हैं ।[१] आशय यह कि पूर्वग्रहरहित रहकर वे व्यक्ति की परख किया करते थे ।

ब) ये व्यक्ति, व्यक्तिगत वैचारिक, काल्पनिक, अपरिवर्तनशील, तथा

---

1. Maslow A.H., Motivation and Personality , 1954 p. 203.

विश्वास के जगत में न रहकर अधिक वास्तविक जगत में यथार्थ की भूमिपर रहते हैं।[1] अर्थात् 'स्व' या 'पर' का वास्तविक प्रत्यक्षीकरण करने की क्षमता इन व्यक्तियों में रहती है,क्योंकि इनकी ज्ञानेन्द्रियां तीव्र-संवेदना-सक्षम होती है,अत: सूक्ष्म निरीक्षण तथा सही बोध की इनमें क्षमता होती है। अतएव मानसिक उलझन या शारीरिक अस्वस्थता के बावजूद भी व्यक्ति या वस्तु के प्रति ये अपना सही मन्तव्य या निर्णय दे सकते हैं।

मन सहित अन्य पांच ज्ञानेन्द्रियों की तीव्रता तथा क्षमता निरालाजी में थी। जिनमें मन,चक्षु,और श्रुति की संवेदना विशेष रूप से सतेज थी। अत: वे अपने तथा बाह्य जगत के विषय में सदा प्रत्यक्ष और यथार्थ बोध कर पाते थे। जिस सूक्ष्म निरीक्षण-शक्ति का महत्व निरालाजी ने काव्य में स्वीकार किया है,[2] उसका परिचय उन्होंने वास्तविक जीवन में भी दिया था। प्राय: मानसिक उलझन या शारीरिक अस्वस्थता से घिरे रहकर भी उनके उक्त गुण में कोई क्षति नहीं पहुंची थी। जीवन और जगत के सही बोध की इच्छा निरालाजी में इतनी तीव्र थी कि वे प्राय: श्री गंगाप्रसाद पांडेय से कहा करते थे कि मनुष्य में और भी अधिक इन्द्रियानुभूति की संवेदना-शक्ति होनी चाहिये,तभी वह इस जीवन और जगत के अनेक रहस्यों एवं तथ्यों का बोध कर सकेगा।[3] आशय यह कि वे वैचारिक,काल्पनिक या विश्वास के जगत में रहकर 'स्व' और 'पर' की भ्रामक कल्पना नहीं करते थे,अपितु प्रत्यक्ष तथा ठोस भूमि पर रहकर अपनी संवेदना-शक्ति द्वारा सही बोध का परिचय देते थे।

क) महाव्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्तियों को आकस्मिक या अज्ञात

---

1. Maslow A.H. Motivation and Personality 1954, p. 206.
2- निराला : प्रबन्ध-प्रतिमा - पृष्ठ- १०८
3- श्री गंगाप्रसाद पांडेय द्वारा प्राप्त सूचना

के प्रति कोई भय नहीं होता । अज्ञात भय से बचने के लिये पहले से ही किसी प्रकार के संरक्षण के हेतु ये व्यक्ति,समय या शक्ति का व्यय नहीं करते । अज्ञात का न वे अस्वीकार करते हैं,न उससे पलायन करते हैं ।[1] आशय यह कि ये व्यक्ति निडर होते हैं ।[2]

निडरता तथा साहसिकता का गुण निरालाजी में बाल्यकाल से था । किशोरावस्था में,अनेक आकस्मिक दुर्घटनाएं,आपत्तियां,तथा उत्तरदायित्व आने पर भी वे कभी विचलित नहीं हुए ।[2] युवावस्था में आकस्मिक आपत्ति-विपत्तियों का उन्होंने पूरे आत्म-विश्वास के साथ सामना किया । वस्तुत: यदि 'वे कभी अपने आप को सामान्य स्थिति से भिन्न किसी विशिष्ट अज्ञात स्थिति में पाते थे तो उन्हें आनन्द होता था,भय या संकोच नहीं । विशेष रूप से उस स्थिति के संघर्षपूर्ण होने पर वे और भी अधिक उत्साहित हो जाते थे ।[3] ऐसी स्थिति में उनका मन सदा विजयी बना रहता था । वे वेदान्ती थे अत: सदा जीवन के पीछे चलते थे,उससे भागते नहीं थे ।[4] अतएव वे जीवन के सभी रहस्यों से अभिज्ञ रहकर,अपनी साहसिकता,निर्भयता तथा आत्मविश्वास का परिचय देते थे। इस प्रकार उक्त गुण निरालाजी के महाव्यक्तित्व को प्रमाणित करता है ।

२) सहृदयता की अखण्डता :- अ) महाव्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्ति जीवन की मूलभूत अच्छाईयों के प्रति,साश्चर्य आनन्द और आदर की भावना सहित अपनी सहृदयता का निरन्तर

---

1. Maslow A.H., Motivation and Personality, 1954. p. 206.

२- निराला : कुल्लीभाट - पृष्ठ- ७८-७९

३- वही : पृष्ठ- ७९

४- वही : पृष्ठ- ७७

नवीन परिचय देने की क्षमता रखते हैं।[1] आशय यह कि ये व्यक्ति अपने जीवन में सदा ताज़गी बनाये रखते हैं।

निरालाजी ने बाल्यकाल से जीवन और जगत में जो भी सत्य, शिव, और सुन्दर है उसके प्रति सदा अपनी सहृदयता का परिचय दिया था। आरंभ से ही साहसिकता तथा नवीनता का गुण उनमें विद्यमान था, अतः वे सदा नवीन अनुभवों की प्राप्ति के लिये तत्पर रहा करते थे। यद्यपि वे नवीन अनुभवों से अभिभूत होकर जीवन में ताज़गी बनाये रखते थे, परंतु उनसे पराभूत होकर उसे ससीम नहीं कर लेते थे। प्रकृति के प्रति निरालाजी का उक्त दृष्टिकोण विशेष रूप से मिलता है। उनके जीवन में बाल्यकाल से प्रकृति के विविध, नवीन रूपों को अनुभूत करने की उत्सुकता दिखाई देती है।

ब) इन व्यक्तियों के लिये दैनंदिन जीवन का कार्य-व्यापार भी उत्साहजन्य, उत्तेजनायुक्त तथा आनन्ददायी हो सकता है। ये व्यक्ति अपने जीवन की अत्यन्त सामान्य अनुभूति से भी प्रेरणा और शक्ति ग्रहण करते हैं।[2]

निरालाजी की ज्ञानेन्द्रियां अत्यन्त सतेज और संवेदनाशील होने के कारण जीवन की सूक्ष्म या साधारण सी अनुभूति भी उनके मानस पर अपना प्रभाव अंकित कर जाती थी। साथ ही, वे निर्भय, साहसिक एवं नवीनताप्रिय थे अतः ये अनुभूतियां उन्हें निरन्तर प्रेरणा और शक्ति प्रदान करती थीं। आशय यह कि निरालाजी में इन्द्रियबोध की अद्भुत क्षमता थी। अतएव उक्त गुण उनके महाव्यक्तित्व को सिद्ध करता है।

३-४ स्व (२८८ ८१/६):

---

1. Maslow A.H., Motivation and Personality 1954,p.214-215.
2. Maslow A.H., Motivation and Personality 1954,p. 215.

१) 'स्व' एवं 'पर' का स्वीकार :- अ) महाव्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्ति, 'स्व' और 'पर' (समाज) दोनों के प्रति एक विशिष्ट प्रकार का दृष्टिकोण विकसित कर लेते हैं, जो मूलत: सहज एवं प्राकृत होता है।[1] अर्थात् वे पर रूप, गुण आदि को उसी प्रकार स्वीकार कर लेते हैं जैसे अपने रूप, प्रकृति आदि को सहज और प्राकृत रूप में स्वीकृत कर लेते हैं। आशय यह कि ये व्यक्ति सहिष्णु होते हैं।

निरालाजी की बाल्यावस्था से संबन्धित जो जानकारी प्राप्त है, उसके आधार पर यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि उक्त काल में उपरोक्त गुण था या नहीं। परंतु उनकी किशोरावस्था में तथा आगे इस बात के अनेक प्रमाण मिल जाते हैं कि वे पर रूप, गुण, शील, धर्म आदि के प्रति सहिष्णु थे। उदाहरणार्थ, स्वयं मांसाहारी होने पर भी उन्होंने कभी अपनी पत्नी को उसके लिये आग्रह नहीं किया। साथ ही मांसाहार करने के कारण वे अपनी पत्नी का रोष सहते रहे, परंतु अपनी मांसाहार की इच्छा को कभी नहीं दबाया।[2] भविष्य में भी कभी किसी प्रकार से अपनी इच्छा या मान्यता को दूसरे पर थोपने का प्रयास नहीं किया, और न किसी के दबाव को स्वयं स्वीकार ही किया।[3]

प्रस्तुत लेखक के शोध-प्रवास के अन्तर्गत केवल एक ही उदाहरण इस प्रकार का प्राप्त हुआ है जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि निरालाजी कभी-कभी अपनी मान्यता को किसी अन्य व्यक्ति पर आरोपित भी किया करते थे। निरालाजी के पुत्र श्री रामकृष्ण त्रिपाठीजी का कहना है कि उनकी इच्छा

---

1. Maslow A.H., Motivation and Personality 1954, p. 206-207.
2- निराला : चाबुक - पृष्ठ- ५६-५७
3- निराला : कुल्लीभाट - पृष्ठ- ३६

के विरुद्ध निरालाजी ने उनसे अपने किसी मित्र की कन्या के साथ विवाह करने के लिये कहा था । रामकृष्णजी के कथनानुसार,उक्त आग्रह करते समय निराला जी ने यह कहा था कि उनकी बात मान लेने पर रामकृष्ण पिता के ऋण से उऋण हो सकते हैं । परंतु निरालाजी के इस कथन को यदि आदेश के रूप में न समझा जाय तो यही कहा जा सकता है कि निरालाजी के मन में उनके द्वारा मान्य उचित का विशेष आग्रह रहता था,परंतु अपनी बात को अनिवार्य रूप से मानने के लिये किसी को बाध्य करने का आशय नहीं रहता था । आशय यह कि निरालाजी के व्यक्तित्व में यह गुण विशेष रूप से था कि वे प्राकृत जीवन तथा स्व और पर को वास्तविक तथा सहज रूप में स्वीकृत किया करते थे । अत: यह उनके महाव्यक्तित्व का ही लक्षण कहा जा सकता है ।

२) दार्शनिक विनोद :- अ) महाव्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्तियों का हास-परिहास सामान्य लोगों की तरह साधारण कोटि का नहीं होता,और इन बातों से रहित होता है-१- किसी को कष्ट या दु:ख देकर लोगों को हंसाना,२- किसी के दोष या न्यूनता पर हंसना,३- स्थूल या गन्दा परिहास करना ।[1] आशय यह कि इन व्यक्तियों का हास-परिहास प्रौढ़ होता है तथा किसी दर्शन से जुड़ा रहता है ।

निरालाजी अत्यन्त विनोदी थे । हास्य या व्यंग का अवसर वे कभी नहीं छोड़ते थे । परंतु किसीको हानि या कष्ट पहुंचाने का उनका आशय कभी नहीं रहता था । साथ ही वे सामनेवाले व्यक्ति के स्तर का पूरा ध्यान रखते थे । प्राय: उनका व्यंग बौद्धिक होता था,अत: किसी विशिष्ट दृष्टि विशेष(दर्शन) से संबन्धित माना जा सकता है । बाल्यकाल में अपनी मामीजी से वे भावुकतापूर्ण

---

1. Maslow A.H., Motivation and Personality 1954,p.222-223.

विनोद भी किया करते थे ।[१]

ब) सामान्यत: इनका हास-परिहास या व्यंग लोगों की मूर्खता, ढोंग,गुरुड़म,आडम्बर आदि के प्रति होता है,जिसमें विशुद्ध हास्य की ही भावना रहती है,किसी को पीड़ा पहुंचाने की नहीं ।[२]

निरालाजी ने विशेषत: युवावस्था तथा अन्तिम अवस्था में समाज की मूर्खता,ढोंग,आडम्बर आदि पर अपनी रचनाओं द्वारा तीव्र व्यंग कसे हैं,जिनका उद्देश्य स्वस्थ हास्य का निर्माण करते हुए यथार्थ या वास्तविकता की ओर संकेत करना था,किसी को पीड़ा पहुंचाना या किसी का अपमान करना नहीं ।

क) इन व्यक्तियों का हास्य-विनोद स्फूर्त तथा अनियोजित होने के कारण प्राय: पुनरावर्तन रहित होता है । अतएव सामान्यत: औसत व्यक्तियों की अपेक्षा ये व्यक्ति कम विनोदी और गंभीर प्रमाणित होते हैं,क्योंकि इनका विनोद सूक्ष्म तथा बौद्धिक होता है ।[३]

निरालाजी हाज़िरजवाबी थे,अत: उनका हास्य-विनोद स्फूर्त होता था और उसमें पुनरावर्तन का अभाव रहता था । जैसा कि बताया जा चुका है, प्राय: उनका विनोद बौद्धिक होने के कारण सूक्ष्म ही होता था । अतएव उक्त गुण उनके महाव्यक्तित्व को सिद्ध करता है ।

३-५ मूल्य (Values):

१) रहस्यात्मक अनुभूति :- अ) महाव्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्तियों की वह तीव्र अनुभूति भी होती है, जिसमें 'स्व'

---

1. निराला - 'चकल्लस' (हास्यरस साप्ताहिक) आभार अंक
2. Maslow A.H., Motivation and Personality, p. 222.
3. Ibid - P. 222-223

का विसर्जन होता है अथवा 'स्व' के परे जाया जाता है। ये व्यक्ति संगीत या कला की आनन्दानुभूति में लीन हो जाया करते हैं।[1]

पहले बताया जा चुका है कि बाल्यकाल से निरालाजी का प्रकृति के प्रति विशेष आकर्षण था। प्रकृति-सौंदर्य देखते समय वे स्वतः को भूल जाया करते थे।[१] इसी प्रकार संगीत सुनते और गाते समय वे अपने आप को भूल जाया करते थे। काव्य सुनते एवं सुनाते समय वे उसकी आनन्दानुभूति में लीन हो जाते थे।[२] अन्तिम अवस्था में विशेष रूप से वे आध्यात्मिक ऊर्ध्वगमन की स्थिति में लीन रहा करते थे।[३] अतएव उक्त गुण निरालाजी के महाव्यक्तित्व को सिद्ध करता है।

इ) साधन एवं साध्य का विवेक : महाव्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्ति चाहे किसी वस्तु को अभिव्यक्त कर सकें या न कर सकें, अपने दैनन्दिन जीवन में घबराहट, अस्थिरता, भ्रम आदि का शायद ही परिचय देते हैं। वस्तुतः ये व्यक्ति अत्यन्त नीतिवान होते हैं, और उनके निश्चित नैतिक मानदण्ड होते हैं। प्रायः ये व्यक्ति उचित कार्य ही करते हैं, यद्यपि औचित्य तथा अनौचित्य संबंधी इन व्यक्तियों की धारणाएं अपने चिंतन पर आधारित होती हैं।[४]

निरालाजी अपने दैनंदिन कार्य व्यापार में प्रायः स्वस्थता तथा स्थिरता का परिचय देते थे। यद्यपि उनके कार्य विशिष्ट या रूढ़िमुक्त हुआ क-

---

1 - Maslow A.H. - Motivation and Personality - P. 217

१- पांडेय गंगाप्रसाद : महाप्राण निराला - पृष्ठ-३२६

२- निराला: प्रबन्ध-प्रतिमा - पृष्ठ- १८२

३- 'अन्तरवेद': वसन्त पंचमी-१९६२ - पृष्ठ-३७ (किशोरावस्था में भी उक्त स्थिति का उल्लेख मिलता है- दे० निराला: देवी - पृष्ठ-१९-२०)

४- Maslow A.H. - Motivation and Personality - P. 220-221

~~ब) धार्मिकता की दृष्टि से ये व्यक्ति रूढ़िबद्ध धार्मिक नहीं होते।~~
-रते थे, परंतु वे निश्चित नैतिक मानदण्डों पर आधारित अवश्य होते थे। प्राय: वे अपने कार्य में औचित्य का ही निर्वाह करते थे। यह गुण उनकी युवावस्था तथा अन्तिम अवस्था में विशेष रूप से मिलता है।

ब) धार्मिकता की दृष्टि से ये व्यक्ति रूढ़िबद्ध धार्मिक नहीं होते। यदि धर्म का तात्पर्य, सामाजिक उत्तरदायित्व या कर्त्तव्यबुद्धि के रूप में लिया जाय तो ये व्यक्ति निश्चय ही धार्मिक होते हैं, परंतु यदि सम्प्रदायवाद या बाह्य आडम्बर के रूप में लिया जाय तो ये कभी धार्मिक नहीं कहे जा सकेंगे।[१]

वेदान्ती होने के कारण निरालाजी सामान्यत: आध्यात्मिक स्तर पर परम् तत्व को ईश्वर के रूप में स्वीकार करते थे। उनकी दृष्टि से समस्त सृष्टि, जीव, जगत उसीके अंश थे। ~~अत:~~ परंतु सामान्य रूप में स्वीकृत धार्मिकता से बद्ध किसी सम्प्रदाय विशेष के अनुगामी वे नहीं थे। सामाजिक उत्तरदायित्व या कर्त्तव्यबुद्धि की दृष्टि से उनकी दीन-~~दु:खी~~ दुखियों के प्रति करुणा, दया, क्षमा, सत्कार आदि भावनाओं के आधार पर उन्हें निश्चित रूप से धार्मिक कहा जा सकता है।

क) ये व्यक्ति साध्य-साधन का पूरा विवेक रखते हैं। सामान्यत: उनका लक्ष्य साध्य पर ही रहता है, तथा साधन को वे साध्य की अपेक्षा गौण समझते हैं।[२]

निरालाजी की दृष्टि में सदा साध्य-साधन का विवेक बना रहता था। यद्यपि वे साधन को भी उतना ही महत्व देते थे जितना साध्य को। इस दृष्टि से वे पश्चिम की आचार-संहिता के विपरीत भारतीय संस्कृति के पक्षपाती थे। अत: उक्त गुण उनके महाव्यक्तित्व को सिद्ध करता है।

---

१. Maslow A.H. - Motivation and Personality - P. 221
2- Ibid- P. 221

३-६ समस्या - निवारण (Problem Solving):

१) समस्या का केन्द्रीकरण :- अ) महाव्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्तियों का ध्यान प्राय: अपनी समस्याओं से भिन्न अन्य समस्याओं पर केन्द्रित रहता है । सामान्यत: वे अहं-केन्द्रित या स्व-केन्द्रित न होकर पर-समस्या-केन्द्रित होते हैं । प्राय: वे स्वयं अपने लिये समस्या नहीं बन जाते,अत: वे अपने विषय में विशेष ध्यान नहीं देते। साथ ही,इन लोगों को अपने जीवन में कोई महत् कार्य पूर्ण करना पड़ता है,महान उत्तरदायित्व निभाना पड़ता है,बाहरी समस्याओं को सुलझाने में अपनी शक्ति का उपयोग करना पड़ता है । इस प्रकार के महत् कार्य को वे अपने कर्त्तव्य के रूप में स्वीकार करते हैं ।[1]

किशोरावस्था से ही निरालाजी पारिवारिक तथा सामाजिक समस्याओं से घिर गये थे,अत: अपनी व्यक्तिगत समस्याओं एवं अभावों की ओर उनका ध्यान प्राय: कम ही गया । इसके अतिरिक्त भावुक तथा कर्मयोगी होने के कारण सामान्यत: दूसरों की समस्याओं पर उनका विशेष ध्यान रहता था। वे किशोरावस्था से हिन्दी भाषा एवं साहित्य का उत्कर्ष करने के लिये तत्पर हो गये थे । वस्तुत: इस कार्य को उन्होंने अपने कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व के रूप में स्वीकार कर लिया था । अतएव उन्होंने अपना समस्त जीवन,मन,वचन और कर्म से हिन्दी की सेवा में लगा दिया था ।[२]

ब) ये व्यक्ति,निर्वैयक्तिक तथा निस्वार्थ भावना से कोई महान् कार्य सम्पन्न करते हैं । इन व्यक्तियों के कर्म परिवार,जाति,देश तथा समस्त मानव जाति के हित से संबन्धित रहते हैं ।[3]

१- Maslow A.H. - Motivation and Personality - P. 211
२- 'अन्तरवेद' : वसन्त पंचमी-१९६२ - पृष्ठ- १८-१९
3- Maslow A.H. - Motivation and Personality - P.211

हिन्दी-सेवा का कार्य, निरालाजी आजीवन अत्यन्त निर्वैक्तिक तथा निस्वार्थ भाव से करते रहे ।[१] उन्होंने सदैव हिन्दी भाषा एवं साहित्य, समाज, तथा राष्ट्र के हित एवं कल्याण का ध्यान रखा ।[२] उक्त महत् कार्य की सिद्धि के लिये वे आजीवन अभावग्रस्त स्थिति में रहकर संघर्ष और विरोध का सामना करते रहे ।

क) ये व्यक्ति व्यापक तथा विश्वात्मक (युनिवर्सल) मूल्यों के आधार पर अपने कार्य किया करते हैं । इनके कार्य, विशेष ~~कालसीमा~~ काल-सीमा के सन्दर्भ में न होकर सम्पूर्ण युग के सन्दर्भ में हुआ करते हैं । संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि ये व्यक्ति कम या अधिक अंशों में दार्शनिक हुआ करते हैं ।[२]

निरालाजी, दार्शनिक या चिंतक प्रारंभ से थे । हिन्दी साहित्य में अपना क्रान्तीकारी[३] रूप उन्होंने दार्शनिक दृष्टिकोण द्वारा ही समर्थित किया है। विशेषत: उनके द्वारा किया गया 'मुक्त-छन्द' का समर्थन तो सम्पूर्णत: दार्शनिक दृष्टि पर आधारित ~~है~~[४] ~~।~~ इसका कारण यही था कि उन्होंने पूरे युग को नयी चेतना तथा विचार प्रदान करने का महत् कार्य अपनाया था । अत: वे महाव्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्ति सिद्ध होते हैं ।

३-७ मानवीय संबन्ध (Human Relations):

१- निराला : प्रबन्ध-प्रतिमा- पृष्ठ- ३३,२१५ , ~~चाबुक---पृष्ठ-~~

२- निराला : प्रबन्ध-प्रतिमा- पृष्ठ- ३० , चाबुक- पृष्ठ- ४६

२- Maslow A.H. - Motivation and Personality - p. 212

३- निराला : कुल्लीभाट - पृष्ठ- १०३

४- निराला : परिमल- भूमिका, पृष्ठ- १२,१६

१) अनासक्ति का गुण :- अ) महाव्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्ति प्राय: सफलतापूर्वक संघर्ष से ऊपर रह सकते हैं, तथा जो बातें दूसरों के लिये कष्टदायक सिद्ध होती हैं उन बातों से ये व्यक्ति अविचलित रहते हैं। वे अपने आप को पृथक् तथा शान्त-चित्त रखते हैं, अत: औसत व्यक्ति के विपरीत, ये व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति को बिना विरोध किये स्वीकार कर लेते हैं।[1] आशय यह कि वे औसत व्यक्ति की अपेक्षा अधिक वस्तुनिष्ठ होते हैं, तथा स्व-केन्द्रित कम, पर-केन्द्रित अधिक होते हैं।

प्राय: युवावस्था के अन्त तक निरालाजी संघर्ष से ऊपर रह पाने में सफल नहीं हुए थे। अत्यन्त भावुक होने के कारण वे अपने आप को पृथक् नहीं रख पाते थे, अत: प्रत्येक छोटी-बड़ी घटना उन्हें प्रभावित कर जाती थी। किसी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति को प्रारम्भ में ज्यों की त्यों स्वीकार करने में अक्षम रहते थे। अत: प्राय: उनके मन में रोष, क्रोध, विरोध, विद्रोह आदि भावनाएं उत्पन्न हो जाया करती थीं। आशय यह कि लगभग युवावस्था के अन्त तक वे व्यावहारिक जीवन में अनासक्ति न रख सके। यद्यपि वे पर-केन्द्रित तो रहते थे परंतु वस्तुनिष्ठ नहीं रह पाये।

ब) ये व्यक्ति प्राय: प्रतिकूल परिस्थिति या वातावरण में भी अपनी प्रतिष्ठा बनाये रखते हैं। इस संबन्ध में, बहुत अंशों तक उनकी सफलता का कारण यह होता है कि वे किसी वस्तुस्थिति के सन्दर्भ में स्व-चिन्तित धारणा या व्याख्या पर दृढ़ रहते हैं। उस विषय में किसी अन्य की सोच-समझ पर निर्भर नहीं रहते।[2]

निश्चय ही निरालाजी अपनी प्रतिष्ठा अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थिति में समान रूप से बनाये रखते थे। बताया जा चुका है कि वे अत्यन्त दृढ़ नि-

---

1- Maslow A.H. - Motivation and Personality - P.212

2- Ibid - P.213

निश्चयी तथा स्वतन्त्र चिन्तक थे । वे सदा स्व-निर्धारित मूल्यों के प्रति आस्थावान रहा करते थे । सरोज के विवाह की समस्या तथा उसके विवाह में उक्त गुणों का परिचय निरालाजी ने दिया था ।

क) इन व्यक्तियों में एकाग्रता की क्षमता औसत व्यक्ति की तुलना में अधिक होती है । तीव्र एकाग्रता के फलस्वरूप इनमें विस्मृति, तथा बाहरी परिवेश को भूलकर अपने आप में डूबे रहने की विशेषता मिलती है ।[1]

एकाग्रता का परिचय निरालाजी बाल्यकाल से देते रहे । प्राय: भोजन पकाते समय, तथा साहित्य-सृजन करते समय सदा वे अपने चतुर्दिक समाज, समूह, परिवेश आदि को भूल जाया करते थे ।प्राय: वे समूह में रहकर भी अपने आप में डूब जाया करते थे ।[2] यद्यपि उनकी स्मृति अन्त तक तीव्र बनी रही ।

ड) अनासक्त रहनेवाले इन व्यक्तियों को प्राय: अपने सामाजिक व्यवहारों में समस्याओं तथा कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है । सामान्य मनुष्य उनके अनासक्ति के गुण को ठीक से न समझ पाने के कारण उन्हें निस्तेज, असभ्य, अमित्रत्वपूर्ण, स्नेहरिक्त या आक्रामक (होस्टाइल) समझते हैं ।[3]

आरम्भ में अनासक्त न रह पाने के कारण, तथा अन्तिम दिनों में अनासक्त रहने के कारण, दोनों स्थितियों में निरालाजी को समस्याओं तथा कठिनाईयों का सामना करना पड़ा था । अन्तिम दिनों की उनकी अनासक्ति के फलस्वरूप लोगों की यह धारणा अवश्य बन गई थी कि वे निस्तेज, असभ्य, अमित्रत्वपूर्ण, स्नेहरिक्त या आक्रामक बन गये हैं । आशय यह कि यद्यपि अनासक्ति का गुण निरालाजी के व्यक्तित्व में युवावस्था के प्राय: अन्त तक सुषुप्त रूप में रहा, परन्तु तत्पश्चात् वह अपने सम्पूर्ण रूप में विकसित दिखायी देता है । अतएव अन्तत: उनके व्यक्तित्व में उक्त गुण की उपस्थिति उन्हें महाव्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्ति f

---

२- 'अन्तरवेद': वसन्त पंचमी-१९६२- पृष्ठ- २७. 1- Maslow A.H., Motivation and Personality p. 213.

3. Maslow A.H. Motivation and Personality, p. 213.

सिद्ध करती है ।

इ) एकान्त की आवश्यकता :- अ) महाव्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्ति अपने आप को नुकसान पहुंचाये बगैर, सुविधापूर्वक एकान्त में रह सकते हैं । औसत व्यक्ति की तुलना में ये व्यक्ति अपेक्षाकृत अधिक एकान्त-प्रिय होते हैं । वस्तुत:, अन्तर्मुखी या बहिर्मुखी जैसे भेद इन व्यक्तियों पर शायद ही आरोपित किये जा सकते हैं, सही रूप में इन्हें अनासक्त ही कहा जा सकता है ।[1]

माता की मृत्यु के कारण तथा अन्य, किसी स्नेहमुक्त कोई स्नेहमय-साहचर्य देनेवाला के न होने के परिणामस्वरूप एकान्त-प्रियता, निरालाजी में बाल्यकाल से उत्पन्न हो गई थी ।[2] महामारी में पत्नी सहित परिवार के अनेक सदस्यों की मृत्यु की विभीषिका तथा हृदयद्रावक[2] घटनाओं ने किशोरावस्था में एकान्त-प्रियता का और अधिक पोषण किया । युवावस्था में सरोज के निधन के अतिरिक्त, पुत्र के वैमनस्यपूर्ण वियोग ने उनके एकान्त की और वृद्धि की । परंतु इस अवस्था में प्राय: यह एकान्त उनके लिये असह्य हो जाता था । अतएव उसे मिटाने के लिये वे भीड़-भाड़ वाली गली में रहने चले जाते, मित्रों, अतिथियों को निमन्त्रण देते, परंतु फिर भी उन्हें चैन न मिलता था, वे ऊब जाते थे, और कभी-कभी अकेले, कमरे में बन्द हो जाया करते थे । इस प्रकार युवावस्था में वे अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी दोनों स्थितियों का परिचय देते रहे । पहले बताया जा चुका है कि इस अवस्था में वे पूर्णतया अनासक्त नहीं रह पाये थे । परंतु अन्तिम अवस्था में वे सम्पूर्णरूप से एकान्त-प्रिय हो गये थे । इस अवस्था में एकान्त, उनकी आध्यात्मिक प्रगति में सहायक हुआ करता था । सन्यास लेने के कारण वे पूर्णरूपेण अनासक्त हो गये थे, और

1- Maslow A.H. - Motivation and Personality - P. 212

१- पांडेय गंगाप्रसाद : महाप्राण निराला-पृष्ठ- ३२६

२- निराला : कुल्लीभाट - पृष्ठ- ७६

अन्तर्मुखी-बहिर्मुखी का भेद भी मिट गया था । अतः उक्त गुण की बढ़ती हुई उपस्थिति उनके महाव्यक्तित्व को प्रमाणित करती है ।

३) घनिष्ठ एवं प्रगाढ़ पारस्परिक संबन्ध :- अ) महाव्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्तियों में,औसत व्यक्ति की तुलना में ये बातें विशेष रूप से मिलती हैं - मिलनसारी, स्नेह,सहज एवं पूर्ण आत्मीयता,अहं के परिहार का प्रयत्न ।[1]

प्रथम तीन गुण निरालाजी के व्यक्तित्व में कितने घुले हुए थे,बताया जा चुका है । उनका अहं वस्तुतः,आत्मविश्वास का ही दूसरा रूप था,जिसे उन्होंने अन्त तक नहीं छोड़ा । अतः इस दृष्टि से उनके द्वारा अहं के परिहार का प्रश्न ही नहीं उठता ।

ब) ये व्यक्ति कुछ ही व्यक्तियों के साथ प्रगाढ़ संबन्ध रखते हैं । उनके मित्रों की संख्या अपेक्षाकृत कम होती है । ये सभी के प्रति अपनी भावनाएं समर्पित नहीं कर पाते ।[2]

बताया जा चुका है कि यद्यपि उनके मित्रों की संख्या बहुत थी , फिर भी वे सबके साथ प्रगाढ़ संबन्ध न रख पाने के कारण प्रायः अकेले ही रहा करते थे । युवावस्था तथा उसके पश्चात् इन्हें मित्रता के स्थान पर मित्रद्रोह का अनुभव अधिक हुआ । अतः उनके अन्तरंग मित्रों की संख्या कम थी ।

क) ये व्यक्ति सभी के प्रति सहनशील तथा संवेदनाशील रहने का प्रयत्न करते हैं । वस्तुतः समस्त मानवजाति के प्रति इनके हृदय में सहानुभूति रहती है । परंतु उनके स्नेह की भावना विवेकशून्य नहीं होती । झूठे,ढोंगी,आडम्बर

१- Maslow A. H.- Motivation and Personality-P.218
२- Ibid- P.218

तथा गुरुडम दिखानेवालों के प्रति कठोर व्यवहार दिखाने में ये कभी नहीं हिचकिचाते । संक्षेप में इनका कठोर व्यवहार उन्हींके प्रति रहता है,जो उसके योग्य हों,अथवा जिसके प्रति कठोरता दिखायी हो उसका हित होता हो,अथवा किसी के प्रति कठोरता दिखाने से अन्य का हित होता हो ।[1]

निरालाजी के करुणायुक्त हृदय का परिचय लोगों को आजीवन अथवा निरालाजी की सभी अवस्थाओं में मिलता रहा । उनकी कठोरता का रूप केवल अन्याय,अनुचित,ढोंग,आडम्बर आदि के प्रति दिखायी देती थी । अत: इस दृष्टि से वे विद्रोही प्रमाणित होते हुए भी परहितकारी सिद्ध होते हैं ।

ड) ये व्यक्ति अपनी ओर कुछ हितैषी-प्रशंसक,मित्र,तथा शिष्य आकर्षित कर लेते हैं । यद्यपि उक्त लोगों के साथ इन व्यक्तियों के संबन्ध प्राय: इकतरफा ही रह पाते हैं । कारण यह कि इनके प्रशंसक,इन व्यक्तियों से,इनकी इच्छा से अधिक की अपेक्षा रखते हैं । साथ ही उन लोगों का समर्पण प्राय: इन व्यक्तियों में संकोच,निराशा,और कभी-कभी अरुचि भी उत्पन्न करता है । कारण यह कि ये व्यक्ति प्राय: सामान्य बन्धनों से ऊपर उठ जाते हैं । फिर भी ये व्यक्ति जहां तक हो सके,उन लोगों के प्रति अपना व्यवहार करुणा और सहानुभूतिपूर्ण रखते हैं ।[2]

निरालाजी के मित्रों के समान,युवावस्था तथा अन्तिम अवस्था में उनके शिष्यों या भक्तों अथवा प्रशंसकों की संख्या भी कम नहीं थी । परंतु प्राय: एक-दो को छोड़कर अन्य सबके प्रति सहज तथा औचित्यपूर्ण व्यवहार रखा । प्राय: युवावस्था के पश्चात्,सामान्यत: वे उनके साथ के सामान्य बन्धनों से ऊपर ही रहा करते थे । अत: उक्त गुण के आधार पर सिद्ध होता है कि निरालाजी महाव्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्ति थे ।

---

1. Maslow A.H. Motivation and Personality - P. 219
2. Ibid - P. 219

४) मानवजाति के साथ अभेद :- अ) कभी-कभी क्रोध,अधीरता या अरुचि उत्पन्न हो जाने के बावजूद,सामान्य रूप से,महाव्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्तियों के हृदय में,मानवजाति के प्रति सहानुभूति बनी रहती है । इन व्यक्तियों में मानव समाज की सहायता करने की तीव्र एवं प्रामाणिक इच्छा रहती है,क्योंकि इनकी दृष्टि में सभी मानव एक ही परिवार के सदस्य होते हैं ।[1]

बाहर से निरालाजी,सामान्यत: क्रोधी तथा कुछ अधीर स्वभाव के दिखायी देते थे,परंतु अन्दर से मृदु एवं भावुक थे । वेदान्ती होने के कारण प्रत्येक मनुष्य में वे परम् तत्व का अंश देखते थे । स्वामी विवेकानन्दजी के समान उनकी करुणा व्यापक तथा विश्वात्मक थी ।

ब) वस्तुत: ये व्यक्ति,औसत व्यक्ति की तुलना में विचार,व्यवहार तथा भावना आदि की दृष्टि से अत्यन्त भिन्न होते हैं,अत: स्वभावत: वे इन सन्दर्भों में,इस संसार में एक अजनबी तथा अकेले से बन जाते हैं । इनके स्नेहियों में से बहुत कम इन्हें समझ पाते हैं । सामान्य लोगों की कमियों या उनके दोषों को देखकर ये व्यक्ति प्राय: उदास और दाुब्ध हो जाते हैं ।[2]

विदित किया जा चुका है कि निरालाजी के व्यक्तित्व में असामान्यताएं थीं,अत: वे अपने आप को इस संसार में अकेला ही अनुभव करते थे । वे अजनबी प्रमाणित हुए क्योंकि उनके व्यक्तित्व का कोई उचित मूल्यांकन नहीं कर पाया । भारतीय जन-समाज के उत्थान की प्रबल आकांदाा होने के कारण वे सामान्य लोगों के हानिकारक दोषों को देखकर प्राय: दाुब्ध एवं उदास हो जाया करते थे । आशय यह कि समाज की सहानुभूति या सहयता न पाने पर भी

1- Maslow A.H.- Motivation and Personality - P.217

2- Ibid- P. 217

वे सदैव मानवजाति के उत्कर्ष तथा प्रगति के लिये कार्यरत रहते थे । अत: उक्त गुण उनके महाव्यक्तित्व को सिद्ध करता है ।

५) विसंस्कृतिकरण काप्रतिरोध :- अ) महाव्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्ति,साधारणतया सांस्कृतिक परिवेश के साथ विभिन्न रूपों में अपना मेल बैठा लेते हैं,परंतु सामान्यत: वे अत्यन्त समझदारीपूर्वक तथा गंभीरता से विसंस्कृतिकरण को रोकते हुए संस्कृति के प्रति एक प्रकार की आन्तरिक अनासक्ति बनाये रखते हैं ।[1]

निरालाजी,प्राकृत जीवन जीने का आग्रह विशेष रूप से रखते थे, परंतु फिर भी अपने सांस्कृतिक जीवन का परिचय वे सदा देते रहे । यद्यपि , अंधविश्वास,तथा अस्वस्थ परम्परा से ग्रस्त सामान्य लोगों की भांति उन्होंने सांस्कृतिक मूल्यों को स्वीकार नहीं किया,परंतु स्वतन्त्रतापूर्वक,अपने ढंग से संस्कृति के मूलभूत तत्वों को जीवन में आत्मसात तथा चरितार्थ करते हुए विसंस्कृतिकरण को रोकते रहे । अन्तिम दिनों में संस्कृति के प्रति उनकी आन्तरिक अनासक्ति दिखाई देने लगी थी ।

ब) अनेक क्रियाकलापों को अपनी दृष्टि से अमहत्वपूर्ण,अप्रमुख या अपरिवर्तनशील समझने पर भी,ये व्यक्ति सामान्यत: उन्हें स्वीकार कर लेते हैं । जिन बातों को ये व्यक्ति विशेष महत्व नहीं देते,उनके प्रति उपेक्षा मात्र दिखाकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर देते हैं ।[2]

शिष्ट,सभ्य और समझदार नागरिक के समान निरालाजी ने अपने दैनन्दिन क्रियाकलाप में प्राय: सुसंगति का परिचय दिया था । शिष्टाचार और सभ्यता को सामान्य रूप से स्वीकार करते हुए भी व्यर्थ की आचरण-पद्धति की वे सदा उपेक्षा किया करते थे ।

1- Maslow A.H.- Motivation and Personality - P. 224

2- Ibid- P. 225

क) ये व्यक्ति,संस्कृति के प्रति सक्रिय अधीरता या व्यग्रता,अथवा बार-बार अपना असंतोष प्रकट नहीं करते,और न किसी प्रकार के परिवर्तन के हेतु जल्दबाजी करते हैं। सामान्यत: ये व्यक्ति संस्कृति के अस्वस्थ तत्वों को धीरतापूर्वक अपनाने का प्रयास करते हैं,और उसके विकास की इच्छा रखते हुए भी उनके धीमे परिवर्तन का स्वीकार कर लेते हैं।इसका यह तात्पर्य नहीं कि इन व्यक्तियों में,अशिव तत्वों के विरोध की शक्ति नहीं होती,अपितु शीघ्र परिवर्तन की शक्यता होने पर,या साहस और दृढ़ता दिखाने का अवसर आने पर ये व्यक्ति अपनी शक्ति का परिचय अवश्य देते हैं। यद्यपि वे किसी क्रान्तिकारी दल से संबन्धित नहीं होते,फिर भी समयानुकूल वे क्रान्तिकारी बन सकते हैं।[1]

संस्कृति का स्वीकार करते हुए भी निरालाजी उसके गुलाम कभी नहीं बने। यद्यपि वे,सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास रोकने के लिये कभी-कभी रोष, विरोध,अधीरता आदि प्रकट किया करते थे,परंतु प्राय: वे स्थिति विशेष को धीरतापूर्वक स्वीकार कर,दृढ़ता तथा आत्मविश्वास के साथ सांस्कृतिक तत्वों को विकसित करने के लिये प्रयत्न किया करते थे। आवश्यकता होने पर उन्होंने शक्ति और क्रान्ति का प्रदर्शन भी किया था,परंतु किसी क्रान्तिकारी दल के सदस्य के रूप में जल्दबाजी या अप्रस्तुत उत्साह का परिचय नहीं दिया था।

ड) वस्तुत: ये व्यक्ति बुद्धिजीवी होते हैं। इनका अपने जीवन में कोई नैष्ठिक-ध्येय (मिशन) होता है,और वे सदा ये अनुभव करते हैं कि संसार का विकास करने के लिये उन्हें सचमुच कोई बड़ा काम करना है। वे यथार्थवादी होते हैं,अत: अर्थहीन त्याग करने के पक्ष में नहीं होते। वे विरोध के विरोधी नहीं होते,परंतु निरर्थक विरोध के विरोधी होते हैं।[2]

बाल्यकाल से ही महत्वाकांक्षी होने के कारण निरालाजी प्रत्येक

१- Maslow A.H. - Motivation and Personality - P. 225-226

2- Ibid - P. 226

कार्य को नैष्ठिक-ध्येय के साथ किया करते थे । विशेष रूप से हिन्दी भाषा और साहित्य तथा भारतीय समाज की प्रगति और विकास का ध्येय सदा उनके सामने रहा । भावुकता के कारण कभी-कभी वे सामान्य दृष्टि से अर्थहीन त्याग भी किया करते थे । अपने कार्य का निरर्थक विरोध वे सहन नहीं कर न पाते थे । यद्यपि उस कार्य को अधिक अच्छे ढंग से पूरा करने के लिये सुझाव के रूप में विरोध,वे अवश्य मान लिया करते थे ।

ई) प्राय: इन व्यक्तियों की युवावस्था में संघर्ष,विरोध,अधीरता,उत्सुकता इत्यादि से युक्त घटनाएं घटित हो जाती हैं,और प्राय: उन्हें यह ज्ञान हो जाता है कि शीघ्र परिवर्तन के हेतु उनकी आतुरता या आशावादी आग्रह अस्थायी था । अत: ये व्यक्ति,दैनन्दिन जीवन के प्रयासों द्वारा ही संस्कृति का विकास करने के हेतु स्थिरतापूर्वक तत्पर रहते हैं ।[1]

युवावस्था में निरालाजी को जिन प्रतिकूल तथा संघर्षात्मक स्थितियों से गुजरना पड़ा,उसका उल्लेख पहले हो चुका है । इस काल के प्राय: अन्त में तथा अन्तिम दिनों में वे आतुरता तथा आशावाद की व्यर्थता को जान चुके थे,अत: उक्त अवस्थाओं में उन्होंने अपने दैनन्दिन जीवन के प्रयासों द्वारा ही संस्कृति को विकसित करने का प्रयास किया था । आशय यह कि निरालाजी ने जहां एक ओर संस्कृति के विकास का स्थिरता तथा गंभीरतापूर्वक प्रयास किया , वहां दूसरी ओर विसंस्कृतिकरण को रोकने के लिये बुद्धिपूर्वक तथा आत्मविश्वास और दृढ़ता के साथ,विरोध भी किया । अत: उक्त गुण उनके महाव्यक्तित्व को सिद्ध करता है ।

उपरोक्त रूप में निरालाजी के महाव्यक्तित्व को सिद्ध कर लेने के पश्चात् उनके कवि और दार्शनिक व्यक्तित्व का स्वरूप निम्नलिखित रूप में देखा जा सकता है ।

1- Maslow A.H.- Motivation and Personality - P. 226

४ : निरालाजी का दार्शनिक-कवि रूप :-

४-० निरालाजी के व्यक्तित्व का विकास तथा उनके महाव्यक्तित्व की पृष्ठभूमि में,उनके दार्शनिक-कवि व्यक्तित्व का विकासात्मक अध्ययन निम्न-लिखित रूप में किया जा सकता है ।

४-१ बाल्यावस्था : इस अवस्था में माता की मृत्यु ने निरालाजी के कवि-मानस पर सबसे अधिक प्रभाव डाला । निरालाजी के काव्य का बड़ा अंश जननी के प्रति संबोधित है । माता के स्नेह तथा उसकी कृपा एवं आशीर्वाद की कामना कवि निराला ने अविरत रूप से की है । उन्होंने सदैव माता को इष्ट देवी के रूप में,उदात्तीकृत एवं आदर्श स्वरूप प्रदान किया है ।[१] अत: कहा जा सकता है कि अप्रत्यक्ष रूप से,उनकी जननि ने निश्चय ही निरालाजी के इन वैशिष्ट्यों को रूप दिया है - १- भाव तथा अभिव्यक्ति का औदात्य,२- शक्ति की उपासना,निडरता और निर्बलता का त्याग, ३- करुणा की चेतना का विस्तार, ४- नारी की आदर्श रूप में (आडिअलाइज्ड) कल्पना ।

राज-परिवेश के अत्यन्त निकट तथा घनिष्ठ सम्पर्क के फलस्वरूप निरालाजी के कवि-व्यक्तित्व में एक प्रकार की विलासिता तथा नागरता के दर्शन होते हैं । उन्होंने स्वयं अपने आप को वैभव और विलास का कवि कहा है ।[२] जो कुछ उदात्त और भव्य है उसके प्रति उनका विशेष आकर्षण मिलता ही है, परंतु यदि किसी वस्तु में ये गुण न हों तो भी वे अपनी प्रतिमा द्वारा उस वस्तु

---

१ - द्रष्टव्य : शर्मा रामविलास : निराला - पृष्ठ - १७७
२- निराला : कुल्लीभाट - पृष्ठ- १०३

में भव्यता की प्रतिष्ठा कर देते हैं । इसी प्रकार उनके भाव या विचारों में असभ्यता या भद्देपन के स्थान पर नागरता और शिष्टता मिलती है । इसी कारण उनकी रचनाओं में विशिष्ट प्रकार के गांभीर्य तथा प्रौढ़ता के दर्शन होते हैं।

बंगाल और बंगला-साहित्य ने उनके कवि-व्यक्तित्व के निर्माण में विशेष योगदान दिया है । [1] बंगाल को वे अपनी जन्मभूमि मानते थे,तथा उसके प्रति उनका विशेष स्नेह था । [2] बंगला भाषा और उसके साहित्य से उन्हें विशेष प्रेम था । [3] बाल्यकाल में उन्हें प्राप्त परिवेश,तथा रवीन्द्र-साहित्य के परिचय ने उनके रोमांटिक कवि-व्यक्तित्व को विशेष रूप प्रदान किया । [4] बंगाल की प्रकृति से वे बहुत प्रभावित हुए । बादल,वर्षा,प्रपात, संक्षेप में बंगाल की जलाशयता उन्हें बहुत प्रिय थी । [5]

बाल्यकाल की विद्रोहात्मक वृत्ति उनके कवि-व्यक्तित्व में भी उतने ही प्रबल रूप से विकसित हुई ।

एक ओर जहां निरालाजी,राज परिवेश का सुख अनुभव करते रहे,वहां दूसरी ओर अपने परिवार तथा उसके समान अन्य परिवारों के जीवन का अनुभव भी उन्हें होता रहा,अत: वे तत्कालीन सामाजिक यथार्थ से भली भांति परिचित थे । जीवन के इन दो रूपों के बीच का अन्तर उनके सामने स्पष्ट था,अतएव उनके कवि-व्यक्तित्व में,यथार्थ की भूमि पर रहकर आदर्श की कल्पना करने की विशिष्टता

१- निराला : परिमल,भूमिका- पृष्ठ- ११
२- शर्मा रामविलास : निराला - पृष्ठ- १८
३- वही : पृष्ठ- १६,३२
४- वही : पृष्ठ- १८,२०
५- वही : पृष्ठ- १६

मिलती है । व्यक्ति,समाज,जाति,धर्म आदि विषयों से संबन्धित उनकी आदर्शोन्मुखता,भेद में अभेद ढूंढने की वृत्ति का परिचय देती है,अत: यह वैशिष्ट्य उनके कवि तथा दार्शनिक व्यक्तित्व में समान रूप से दिखाई देता है ।

बताया जा चुका है कि बाल्यकाल में अकेले बैठकर मन ही मन वे सोचते रहते,अत: यही चिन्तनप्रियता इस अवस्था से प्रारंभ हुई । इसके परिणामस्वरूप एक दार्शनिक सी चिन्तनशीलता,उनके व्यक्तित्व का प्रमुख लक्षण बन गई ।

४-२ किशोरावस्था : इस अवस्था में निरालाजी को अपनी पत्नी द्वारा,खड़ीबोली के रूप में काव्याभिव्यक्ति का माध्यम प्राप्त हुआ । इसके अतिरिक्तउदात्त सौंदर्य की चेतना तथा प्रेरणा का आधार भी उनकी पत्नी ही रहीं । पत्नी के चिर वियोग ने उनके कवि-व्यक्तित्व की उन दो विशेषताओं की और वृद्धि की जो माता के अभाव से उत्पन्न हुई थीं- यथा,करुणा की चेतना का विस्तार,और नारी की आदर्श रूप में कल्पना ।

इस अवस्था में निरालाजी को पारिवारिक उत्तरदायित्व के साथ आर्थिक असमानता तथा सामन्ती अत्याचार का भी बोध हुआ । इसके फलस्वरूप उनमें सामाजिक या प्रगतिवादी आस्था विकसित होने लगी ।यद्यपि एक सामाजिक सुधारक के रूप में वे अपने असंतोष को अभिव्यक्त न कर सके,परंतु उक्त आस्था की काव्य में,उत्कृष्ट एवं काव्यौचित-औदात्य सहित अभिव्यक्ति की है। साथ ही संघर्ष तथा अन्याय के परिणामस्वरूप विद्रोही कवि-व्यक्तित्व का विकास भी इस अवस्था में देखा जा सकता है ।

आशय यह कि किशोरावस्था में उनके कवि-व्यक्तित्व के इन वैशिष्ट्यों की ओर संकेत किया जा सकता है- १- सौन्दर्य की उदात्त भावना, २- अन्याय के प्रति विद्रोह ।

पारिवारिक शोक, सामाजिक विषमता तथा सामन्ती अत्याचारों ने इस अवस्था में उनके दार्शनिक व्यक्तित्व को रूप प्रदान किया । मनुष्य के जीवन की क्षणभंगुरता, स्नेह तथा सत्य का अवमूल्यांकन, मनुष्य द्वारा मनुष्य का ही शोषण आदि अनेक समस्याओं ने, संभव है, उन्हें चिन्तन-मनन की ओर प्रेरित किया हो ।

४-३ युवावस्था : रामकृष्ण मिशन का सम्पर्क तथा समन्वय के सम्पादन-कार्य ने निरालाजी को स्वामी रामकृष्ण परमहंस तथा स्वामी विवेकानन्द के विचारों का गहन अध्ययन करने का अवसर प्रदान किया । स्वामी विवेकानन्द द्वारा प्रतिपादित नवीन विचारों को उन्होंने काव्य तथा जीवन दोनों में आत्मसात किया । इस प्रकार उनके जीवन और काव्य का मेरुदण्ड ही चिन्तन या दर्शन बन गया, फलस्वरूप अत्यन्त प्रौढ़, सचेत, एवं उदात्त काव्य का निर्माण निरालाजी द्वारा हुआ । साथ ही रामकृष्ण मिशन द्वारा परिचालित शक्ति की उपासना ने उनकी बाल्यकालीन मातृ-भक्ति में कंचन सा योग दिया । मां या देवी के प्रति संबोधित इस काल की रचनाएं उक्त तथ्य की प्रमाण हैं ।

बंगाल की वर्षा तथा जलाशयता के साथ इस काल में निरालाजीने उत्तर प्रदेश की ग्रीष्म तथा शरद ऋतु का भी रूप देखा । इस प्रकार प्रकृति के सभी रूपों द्वारा निरालाजी का कवि-मानस प्रभावित होता रहा, यद्यपि विराट सौंदर्य के प्रति वे विशेष रूप से आकर्षित होते थे । जिस प्रकार 'बादल' उनके काव्य

में उनके व्यक्तित्व के रूप में दृष्टिगत होता है उसी प्रकार ग्रीष्म को वे जीवन के ताप का प्रतीक कहा करते थे ।[१]

व्यावहारिक तथा साहित्यिक जीवन की विडंबना ने उनके विद्रोही कवि-रूप को और अधिक उग्र रूप में प्रकट किया । नवीन सृजन के हेतु समस्त अशिव तत्वों के संहार की आकांक्षा व्यक्त करता हुआ उनका विद्रोही स्वर इस अवस्था में तीव्र बनता गया ।

धीरे-धीरे बढ़ती हुई निरालाजी की अकेलेपन की अनुभूति इस अवस्था में घनीभूत होती हुई दिखाई देती है । साथ ही ~~प्रसस~~ प्राय: इस अकेलेपन को दूर करने के लिये मृत्यु के सहवास की कामना उनके कवि-मानस में उभरती हुई दृष्टिगत होती है । कहा जा सकता है कि सरोज के निधन के परिणामस्वरूप उत्पन्न शोकानुभूति उक्त मन:स्थिति के निर्माण में कारणभूत रही होगी ।

आशय यह कि इस अवस्था में निरालाजी के कवि-व्यक्तित्व की इन विशेषताओं का स्वरूप स्पष्ट होता है - १- असंतोष की विद्रोहात्मक प्रतिक्रिया, २- शोकानुभूति, ३- मृत्यून्मुखता ।

रामकृष्ण मिशन के सम्पर्क के फलस्वरूप निरालाजी की चिन्तनशीलता अधिक प्रौढ़ बनती गई । विशेष रूप से स्वामी विवेकानन्दजी के दार्शनिक विचारों ने, जीवन और जगत के प्रति उनके दृष्टिकोण को स्पष्टता एवं गंभीरता प्रदान की। संभवत: वे प्रश्न या समस्याएं जिनसे वे अपनी किशोरावस्था में परेशान थे, उनका समाधान वे इस अवस्था की चिन्तन-प्रक्रिया अथवा चिन्तन-धारा द्वारा प्राप्त कर सके ।

१- श्री गंगाप्रसाद पांडेय द्वारा प्राप्त सूचना

४-४ वृद्धावस्था : समाज द्वारा प्राप्त उपेक्षा और उपहास की प्रतिक्रिया, निरालाजी ने उसी रूप में परंतु अधिक तीव्रता के साथ, समाज और जीवन के प्रति व्यक्त की । इस काल की उनकी व्यंगात्मक रचनाएं तथा अभिव्यक्ति की मार्मिकता के हेतु किये गये विभिन्न काव्य प्रयोग उक्त तथ्य के प्रमाण हैं । उनके काव्य-प्रयोग तथा व्यंग, मानसिक असंतुलन के प्रमाण न होकर, उनकी सचेत तथा बुद्धिनिष्ठ अनुभूति का परिणाम हैं ।

इस अवस्था में निरालाजी, अपने अहं, ख्याति, प्रतिष्ठा, राग, विराग, विद्रोह आदि से ऊपर उठकर एकमात्र परम सत्ता के आगे-नत झुके हुए दृष्टिगत होते हैं । अत: इस काल में उनके संत-कवि-व्यक्तित्व के दर्शन होते हैं । मृत्यु की कामना ने भी इस अवस्था तक उन्हें घेर लिया था, अत: तत्संबन्धी अनुभूति इस काल की रचनाओं में देखी जा सकती है । परंतु यह स्वीकार करना होगा कि समस्त काव्य-चेतना द्वारा अपनी मानसिक तथा शारीरिक अस्वस्थता का प्रतिकार कर उन्होंने यही प्रमाणित किया कि वे जन्मत: और मूलत: कवि थे । आशय यह कि इस काल की उनके कवि-व्यक्तित्व की इन विशेषताओं का निर्देश किया जा सकता है - १- व्यंगात्मकता, २- भक्तिजन्य समर्पण ।

चिन्तन की उच्चता, दर्शन की गहनता तथा गंभीरता के साथ एक दार्शनिक की प्रौढ़ता को निरालाजी इस अवस्था में पूर्ण रूप से प्राप्त कर चुके थे।

४-५ उपसंहार : उपरोक्त समस्त विवेचन का पूर्ण अनुशीलन करने के पश्चात् यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि निरालाजी का व्यक्तित्व बहुमुखी होते हुए भी, मूलत: उनका दार्शनिक-कवि का व्यक्तित्व था । कवि वे जन्म से थे, `दार्शनिक` उनका प्रमुख विशेषण था ।

------ ------ ------ ------